श्रीद्वारकेशो जयति

(श्रीद्वा० ग्र० माला का द्वादश पुष्प)

श्रीतृतीय-गृहकीर्तन-प्रणालिका

—:०:—

चतुर्थ भाग

—:०:—

सम्पादक

गो० श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज

(तृतीयपीठाधीश्वर)

—:०:—

प्रकाशक

श्रीविद्या-विभाग, कांकरोली

सं० १९९४

प्रथमावृत्ति १५०० } दशाब्दी-महोत्सव { मूल्य १)

प्रकाशक
प्रो० कंठमणि शास्त्री, विशारद
संचालक
श्रीविद्या-विभाग, कांकरोली



मुद्रक
श्रीदुलारेलाल भार्गव
अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस
लखनऊ

श्रीद्वारकेशो जयति

"दो शब्द"



द्वारकाधीश (तृतीय गृह) की 'कीर्तन-प्रणालिका' प्रकाशित करते हुए आज हमें हर्ष होता है । श्रीद्वा० प्राकट्य वार्ता की भूमिका में इस विषय पर प्रकाश डाला जा चुका है कि—यह ग्रन्थ का चतुर्थ भाग है। प्रस्तुत भाग का सम्पादन तृतीयपीठाधीश्वर गोस्वामी श्रीव्रजभूषणलालजी महाराज ने स्वयं किया है । इस विषय में उनकी तलस्पर्शी विद्वत्ता एवं अथक परिश्रम के लिये वैष्णव-सृष्टि की ओर से महाराजश्री को धन्यवाद दिये विना नहीं रहा जा सकता ।

अभी तक श्रीद्वा० के घर की वैष्णव-सृष्टि में कीर्तन-प्रणाली का जो क्रम प्रचलित था, वह अस्त-व्यस्त एवं अपूर्ण था । इसका कारण केवलमात्र यही था कि—प्रस्तुत विषय का आपादचूड पर्यालोचन न तो किसी उत्तरदायित्व-पूर्ण व्यक्ति ने ही किया था और न कोई ऐसी शुद्ध प्रणालिका की पुस्तक ही उपलब्ध थी । कांकरोली के कीर्तनियाँ-समाज के पास जो क्रम लिखा हुआ है, उसमें त्रुटि ज्ञात होने पर उसका यदाकदाच संशोधन करना ही पड़ता था, फिर उससे प्रतिलिपि करनेवाले वैष्णवों की तो कथा ही क्या कहना ? कई बार ऐसा प्रसंग आया कि—भावुक वैष्णवों ने आवश्यकता से अधिक द्रव्य खर्च करते हुए भी कीर्तन की शुद्ध प्रणालिका हस्तगत नहीं कर पाई, जिससे प्रदेश में महाराजश्री को स्वयं उन-उन प्रतियों को शुद्ध कराना पड़ा ।

इन सब आनेवाली असुविधाओं के कारण यह नितान्त आवश्यक समझा गया कि—एक शुद्ध कीर्तन-प्रणालिका प्रकाशित कर दी जाय । पर यह गुरुतर कार्य सेवा, शृंगार एवं कीर्तन, इन तीनो विषयों का विशेषज्ञ ही कर सकता था । हमारा सौभाग्य है कि—इस कार्य को स्वयं महाराजश्री ने अपने हाथ में लिया, और उसे सर्वांग-पूर्ण कर प्रकाशित करने का आदेश प्रदान किया । वैष्णव-समुदाय को यह जानकर आश्चर्य होगा कि महाराजश्री ने स्वयं टाइप कर इसकी प्रेस-कापी तैयार की थी । अस्तु । अब यह प्रकाशित होकर वैष्णव जनता के ज्ञानार्थ उपस्थापित है ।

प्रस्तुत कीर्तन-प्रणालिका से न केवल तृतीय गृह के सेवा-रसिक वैष्णवों का ही लाभ होगा, प्रत्युत अन्य मन्दिरों की कीर्तन-प्रणालिका का क्रम निर्धार, पद्धति-संशोधन एवंच आवश्यक कीर्तन-संरक्षा का भी पुण्यतम कार्य-सम्पादित होगा।

इस प्रणालिका में जिन कीर्तनों की प्रतीक दी गई है, उनमें से अधिकांश प्रचलित एवं परिचित हैं, अवशिष्ट कीर्तन हस्त-लिखित संग्रह से लिखे जा सकते हैं। इसके सम्पादक महोदय का यह भी विचार है कि ऐसे अज्ञात कीर्तन संग्रहरूपेण मुद्रित करा दिये जायँ, जो मुद्रित पुस्तकों में नहीं हैं—इसके साथ ही जो अन्यत्र दुर्लभतम हैं। इससे जहाँ कीर्तन-मण्डल का उपकार होगा, वहाँ हिन्दी-साहित्य का उद्धार भी। श्रीदयामय प्रभु वह स्वर्ण-अवसर शीघ्र ही उपस्थित करेंगे, ऐसी सदाशा हृदय-भवन में जागरूक है।

इस प्रणालिका के पहले हम श्रीद्वारकाधीश की प्राकट्य वार्ता प्रकाशित कर चुके हैं, जो ग्रन्थ का प्रथम भाग है, प्रस्तुत पुस्तक चतुर्थ भाग है। यद्यपि नियमानुसार हमें द्वितीय एवं तृतीय दोनो भाग प्रकाशित कर चतुर्थ भाग के प्रकाशन में हाथ डालना चाहिए था, पर सम्पादन-साहित्य की सुलभता से हमें उस क्रम को तोड़ना पड़ा है, इसके लिये हम ग्राहकों तथा पाठकों से क्षमा-याचना करते हैं। सम्प्रति तृतीय भाग प्रेस में है और द्वितीय भाग लिखा जा रहा है। द्वितीय भाग, जो 'कांकरोली का इतिहास' होगा, एक ऐसा विषय है, जिसके लिये बड़ी उत्तर-दायित्व-पूर्ण पद्धति से समझ-सोच के साथ एक-एक पंक्ति लिखनी पड़ती है, अतः उसके विषय में विलम्ब होना स्वाभाविक है। फिर भी हम यथासाध्य प्रयत्नशील हैं कि सम्पूर्ण पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित हो जाय।

प्रस्तुत 'प्रणालिका' को सर्वाङ्गपूर्ण और सुन्दर बनाया गया है, फिर भी जो त्रुटियाँ रह गई हों, उनके लिये हम पाठकों से क्षमा माँगकर अपने इन 'दो शब्दों' से विराम लेते हैं।

विधेय—
पो० कण्ठमणि शास्त्री, विशारद
संचालक
विद्या-विभाग—कांकरोली

दोलोत्सव
सं० १९९४

श्रीतृतीय गृह की कीर्तन-प्रणालिका

विषय-सूची

विशेष—उक्त उत्सवों में चारों जयन्ती, स्नान-यात्रा, रथ-यात्रा, दिवाली और अन्नकूट, दान-प्रबोधिनी और देवशयनी एकादशी, होली और दोलोत्सव आदि कितने ही उत्सव शास्त्र-निर्णयानुसार होते हैं, अतः उस दिन होना चाहिये। यहाँ सामान्यतया तिथि-निर्देश है। —संपादक



श्रीद्वारकेशो जयति

तृतीय गृह की कीर्तन प्रणालिका

——:o:——

भाद्र-कृ० ८ (जन्माष्टमी)

श्री के जागवे सूँ झाँझ पखावज सूँ कीर्तन होय

१ श्रीवल्लभ ३ गुण गाऊँ०

२ जय २ श्रीवल्लभ प्रभु०

३ जागिये व्रजराजकुँवर०

४ छगन मगन प्यारेलाल०

५ जय २ श्रीसूरजा कालिन्द०

६ आज बड़ो दरबार देख्यो०

७ माइ सोहिलरा आज नन्द०

मंगल भोग सरे।

१ मंगल मंगलं०

मंगला दर्शन।

१ नयन भरि देखो नंदकुमार०

पंचामृत दर्शन।

१ व्रज भयो महरि के पूत०

अभ्यंग समय।

१ आपुन मंगल गावे०

२ सब मिल मंगल गाओ माइ०

तिलक के दशन।

(राग सारंग की आलापचारी)

१ आज बधाई को दिन नीको०

२ जायो हो सुत नीको०

गोपी-वल्लभ आये।

१ आज बन कोऊ वे जिन जाय०

२ यह सुख देखो री तुम०

३ जनम फल मानत जसोदा०

४ झगरन तें मोहि बहुत०

५ जसोदा नाल न छेदन दैहों

राजभोग आये (ढाढ़ी)।

१ हों व्रज माँगनो जू०

२ नंदजू मेरे मन आनंद०

३ नंदजू तिहारे सुख दुख०

४ व्रजपति माँगिये जू०

राजभोग दर्शन।

१ ए हो ए आज नंदराय०

भोग के दर्शन। तमूरा सूँ (राग पूरवी)

१ रानी जू जायो पूत सुलच्छन०

२ कन्हैया कब चलि है०

संध्या-समय।

१ मेरे मन आनंद भयो०

सेन के दर्शन।

(झाँझ-पखावज राग, मालव की अलाप)

१ मोहन नंदकुमार०

२ पद्म धरचो जन ताप०

जागरण के दर्शन।

१ धन रानी जसुमति गृह०

२ गावत गोपी मृदु०
३ प्यारे हरि को विमल जस०
४ यह धन धर्म ही ते पायो०
५ ऐसो पूत देवकी जायो०
६ जन्मत ही आनंद भयो०
७ आनंद बधावनो०
८ जन्म लियो शुभ लग्न०
९ रंग बधावनो०
१० आज तो आनंद माइ आज तो०
११ भादों की अति रेन अँधियारी०
१२ अँधियारी भादों की रात०
१३ आठें भादों की अँधियारी०
१४ भादों की रैन अँधियारी०
१५ श्रवन सुन सजनी बाजे मंदिलरा०
१६ रावल के कहें गोप०
१७ जसोदे बधाइयाँ०
१८ श्रीगोपाललाल गोकुल चले०

जन्म-समय।

१ व्रज भयो महरि के पूत०

छठ्ठी पूजन-समय ।

१ आज छठी जसुमति के सुत की०
२ मंगल द्योस छठी को आयो०

महाभोग के दर्शन। (तमरा सूँ)

१ ललना हों वारी तेरे या मुख पर०

पलना खुले पहले टीकेत गावे ।

१ मंगल मंगलं०
२ प्रेंख पर्यंक शयनं०

नंदमहोत्सव के दर्शन ।
(राग सारंग की आलापचारी)

१ ए हो ए आज नंदराय०
२ सब ग्वाल नाचे गोपी गावे०
३ आँगन नंद के दधिकांदो०
४ तिहारे आयो पूत०
५ नंद बधाई दीजे हो०
६ आज महामंगल महराने०
७ घर-घर ग्वाल देत हैं हेरी०
८ नंदमहोत्सव हो बड़ कीजे०
९ तुम जु मनावत सोइ दिन आयो०

बैठ के गावनो ।

१० जायो हो सुत नीको०
११ सोवन फूलन फूली०
१२ चिरजीयो गोपाल०
१३ बधाई माइ आज०
१४ मैं जोगी जस गाया०
१५ झूलो पालने गोविंद० (पलना)
१६ अपने बाल गोपाल०
१७ नंद को लाल व्रज पालने०
१८ हालरो हुलरावत माता०
१९ माइ री कमलनैन श्याम०
२० फूली चायन हुलरावे०
२१ वारी मेरे लटकन पग०
२२ तुम व्रजरानी के लाला०

आरती समय ।

१ तिहारो घर सुबस बसो०

(ढाढ़ी ठाडे होयके नंदरायजी कूँ संग ठाडे राख के गावने)।

१ नंदजू मेरे मन आनंद भयो०

२ हौं व्रज माँगनो जू०

३ नंदजू तिहारे सुख दुख०

धीरे-धीरे चलनो०

४ व्रजपति माँगिये जू०

(भये पुरंदर चले पुरन को यातुक सूँ, जगमोहन में पधारे तब०)

जगमोहन के बाहर आयके०।

मिल निकसी है देत असीस०

बैठक में आयके पूरो करनो। फेर—

१ गहयो नंद सब गोपिन०

भाद्र० कृ० ६(श्रीव्रजभूषणजी महाराज को उत्सव)

मंगल आरती ।

१ वधाई मंगलचार

राजभोग आये ।

१ श्रीलक्ष्मण गृह महामंगल भयो०

२ शुभ वैशाख कृष्ण एकादशी०

३ जे वसुदेव किये पूरन तप०

४ वल्लभनंदन रूप अनूप०

भोगसरे ।

१ गोवल्लभ गोवर्धन वल्लभ०

राजभोग दर्शन ।

१ जब मेरो मोहन चलेगो०

आरती समय ।

२ वधाई को दिन नीको०

भोग के दर्शन ।

१ जो पे श्रीविट्ठल रूप न धरते०

२ नांतर लीला होती जूनी०

संध्या-समय ।

१ मेरे मन आनंद भयो०

शयन भोग आये ।

१ भक्तसुधा बरषत ही प्रगटे०

२ श्रीलक्ष्मण गृह प्रगट भये हैं०

३ श्रीवल्लभलाल के गुण गाऊँ०

४ आज धन भाग्य हमारे०

भोगसरे ।

१ गाऊँ श्रीवल्लभनंदन के गुण०

शयन के दर्शन ।

१ धर्म हीं ते पायो०

२ तिहारो घर सुबस बसो०

पोंढवे में ।

१ कुंजमहल आज मंगल है री०

२ कुंज महल में पौढ़े दोऊ०

भाद्र० कृ० १० मंगला दर्शन ।

१ जा दिन कन्हैया मोसों मैया०

शृंगार समय ।

१ शोभित कर नवनीत लिये०

२ व्रज की रीत अनोखी माई०

३ बाला मै जोगी जस गाया०

शृंगार दर्शन ।

१ आज प्रात ही तुतरात०

राजभोग आये, भोजन के कीर्तन ।

राजभोग दर्शन ।

१ नंदजू मेरे मन आनंद भयो०

२ आँगन खेलिये झनक-मनक०

भोग के दर्शन ।

१ दुहुकर फोंदना मुख मेलत०

संध्या समय।

१ काहु जोगिया की नजर०

शयन भोग आये व्यारू के कीर्तन।

शयन दर्शन।

१ चलो मेरे लाडिले हो०

पोंढवे में।

१ सोवत नींद आय गई श्यामे०

भाद्र० कृ० १३ छट्ठी को पलना।

मंगला दर्शन।

१ सखीरी नंदनंदन देख०

शृंगार समय।

१ बाला मैं जोगी जस गाया०

२ जसुदा अपनो लाल खिलावे०

शृंगार दर्शन।

१ आयो सो आँगन बोले माइ जसोदा०

राजभोग आये, भोजन के कीर्तन।

राजभोग दर्शन।

१ क्रीडत मणिमय आँगन नंद०

भोग के दर्शन।

१ सोहत श्याम तन पीत झगुलिया०

संध्या समय।

१ काहु जोगिया की०

शयनभोग आये, व्यारू के कीर्तन।

शयन दर्शन।

१ चलो मेरे लाडिले हो०

पोंढवे में।

१ अहो मेरे लाडिले हो नींद करो०

भाद्र० कृ० १४ (श्रीगिरिधरलालजी के उत्सव की बधाई आश्विन कृ० ६ समान)

भाद्र० शु० १ (राधाष्टमी की बधाई)

मंगला में—श्रीठाकुरजी की बाललीला

शृंगार समय।

१ जनम बधाई कुँवरि लली की०

२ आज बधाई है बरसाने०

३ बाजत रावल माँझ बधाई०

४ आज रावल में जयजयकार०

राजभोग आये।

१ जनम लियो वृषभान गोप के बैठे सब सिंहद्वार री०

२ बरसाने वृषभान गोप के आनंद की निधि आई जू०

राजभोग दर्शन।

१ आज वृषभान के आनंद०

भोग के दर्शन।

१ प्रगट्यो सब व्रज शृंगार०

२ बधाई की विधि नीकी०

संध्याभोग आये।

१ आज बरसाने बजत बधाई०

संध्या समय।

१ मेरे मन आनंद भयो०

शयन भोग आये।

१ बजत वृषभान के परम बधाई०

२ माइ प्रगटी कुँवरि वृषभान के०

३ जबते राधा भूतल प्रगटी०

४ रावल आज कुलाहल माई०

शयन दर्शन।

१ रावल राधा प्रगट भई०

पोंढवे में ।

१ धन रानी जसुमति गृह०

भाद्र० शु० २ (श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव)
आश्विन कृ० १३ समान ।

भाद्र० शु० ५ (श्रीचन्द्रावलीजी को उत्सव)
मंगला दर्शन ।

१ प्रगटी नागरी रूपनिधान०

शृंगार समय ।

१ श्रीवृषभान के हो आँगन मंगल भीर०

शृंगार दर्शन ।

१ बाजेबाजे मंदिलरा वृषभान नृपति दरबारा०

राजभोग आये ।

१ महारस पूरन प्रगट्यो आन०

राजभोग दर्शन ।

१ आज वृषभान के आनंद०
२ चन्द्रभान के बधाई०

भोग के दर्शन ।

१ प्रगट्यो सब व्रज को शृंगार०
२ बधाई की विधि नीकी०

संध्या समय ।

१ मेरे मन आनंद भयो०

शेष क्रम भाद्र० शु० १ के समान
विशेष में भादों की उजियारी गवे ।

भाद्र० शु० ७ भोग के दर्शन ।

१ मुदित निशान बजावहीं०

संध्या समय ।

१ ढाढिन नृत्यत सुलप सुदेश०

शयन भोग आये ।

१ आज छठी की रात०
२ आज बहोत वृषभान घोष मे०
३ फूल फूल वृषभान गोप ने०
४ आदर दे वृषभान गोप ने०

शयन भोगसरे ।

१ अखिल भुवन की सुंदरता०
२ प्रगट भई शोभा त्रिभुवन की०

शयन दर्शन ।

१ आठे भादों की उजियारी०

भाद्र० शु० ८ (राधाष्टमी)

श्री के जागवे सूँ झाँझ-पखावज सूँ कीर्तन होंय

मंगला दर्शन ।

१ प्रगटी नागरी रूपनिधान०

शृंगार समय ।

१ जनम बधाई कुँवरि ललीकी०
२ आज बधाई है बरसाने०
३ बाजत रावल माँझ बधाई०
४ आज रावल में जयजयकार०
५ जनम लियो वृषभान गोप के बैठे०

शृंगार दर्शन ।

१ बाजे बाजे मंदिलरा०

राजभोग आये ।

१ आनंद आज भवन वृषभानके०
२ चलो वृषभान गोप के द्वार०
३ महारस पूरन प्रगट्यो आन०
४ राधेजू शोभा प्रगट भई०
५ रावल राधा प्रगट भई०
६ आज वृषभान के घर फूल०
७ ढाढी महरजू दीजे मोहि बधाई०
८ चलचल ढाढी बिलम न कीजे०

९ नंदराय को ढाढी आयो वृषभान०
१० कुँवरी प्रगटी जान गावत ढाढी०

राजभोग दर्शन।

१ आज वृषभान के आनंद०

आरती पीछे भीतर तिलक होय तब।

१ राधा जू को जन्मभयो सुन माइ०

भोग के दर्शन।

१ प्रगट्यो सब व्रज को शृंगार०
२ आज बधाई की विधि नीकी०

ढाढी आवे तब।

१ जदुबंसी जजमान तिहारो ढाढी आयो हो०

संध्या समय।

१ मेरे मन आनंद भयो०

शयन भोग आये।

१ माइ प्रगटी कुँवरि वृषभान के०
२ वृषभान के बेटी जाइ०
३ बजत वृषभान के परम बधाई०
४ रावल राधा प्रगट भइ०
५ प्रगट भइ शोभा त्रिभुवन की०
६ सकल भुवन की सुन्दरता०
७ भादों सुद आठें उजियारी०

शयन दर्शन।

१ आठें भादों की उजियारी०
२ श्रीवृषभानरायजू के आंगन बाजत०

पोढवे में उत्सव के।

भाद्र० शु० ६ (श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव)

मगला दर्शन

१ बधाई मंगलचार०

शृंगार समय।

१ बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल प्रगटे०
२ श्रीवल्लभ निज नाथ०
३ चहुँजुग वेद वचन प्रतिपारयो०
४ अबके द्विजवर ह्वै सुख दीनो०
५ जय श्रीलक्ष्मण सुवन नरेश०

राजभोग आये।

१ श्रीलक्ष्मणगृह महामंगल भयो०
२ शुभ वैशाख कृष्ण एकादशी०
३ जे वसुदेव किये पूरन तप०
४ वल्लभनंदन रूप अनूप स्वरूप०

भोगसरे।

१ गोवल्लभ श्रीगोवर्धनवल्लभ०

राजभोग दर्शन।

१ बधाई को दिन नीको०

भोग के दर्शन।

१ जो पे श्रीविट्ठल रूप न धरते०
२ नातर लीला होती जूनी०

संध्याभोग आये।

१ कृपासिंधु श्रीविट्ठलनाथ०

संध्या समय।

१ हौं चरनातपत्र की छैया०

शयनभोग आये।

१ भक्तसुधा बरषत ही प्रगटे०
२ श्रीलक्ष्मणगृह प्रगट भये हैं०
३ श्रीविट्ठलनाथ बसत जिय जाके०

शयन भोगसरे।

१ गाऊँ श्रीवल्लभनंदन के गुण०

शयन दर्शन।

१ आज धनि भाग्य हमारे०

२ जुग-जुग राज करो श्रीगोकुल०

पोढवे में उत्सव के पद।

भाद्र० शु० १० मंगला दर्शन।

१ कुँवरि राधिके तू सकल सौभाग्य०

शृंगार समय।

१ अहो मेरी प्रानप्यारी०

२ हित की बात कहत है मैया०

राजभोग आये।

१ खेलन गइ नंदबाबा के महर गोद कर लीनी हो०

राजभोग दर्शन।

१ कहा जु भयो सुख मोरे काहू कछू जू कह्यो०

भोग के दर्शन।

१ तू नेक बरज री जसोदा मैया०

२ रूप देखि नैना पलक लगे नहिं०

संध्या समय।

१ अहो विधना तोपे अचरा पसार०

शयन भोग आये।

१ यह दुलरी वृषभान लई कब०

२ जसोदा तब गोपाल बुलाये०

शयन दर्शन।

१ गूजारिया गर्व गहेली०

पोंढवे में।

१ जसुमति सुत पलका पोढावे०

भाद्र० शु० ११ (दान एकादशी)

मंगला दर्शन।

१ दान देहो गुजरेटी०

शृंगार—समय (झाँझ पखावज)

१ कहो किन कीनों दान दही को०

२ पिछोरी बाहन दे हो दान

३ माधोजू जान देहो चली बाट०

४ मटुकिया आन उतार धरी०

५ कहो किन दान दानी को०

६ गोवर्धन की शिखर ते हो०

शृंगार दर्शन।

१ कहो जू कैसो दान माँगिये हम देव पूजन आई०

राजभोग आये।

१ दानघाटी छाक आइ०

२ आव आव री छकहारी०

३ आज दधि मीठो मदनगोपाल०

४ लालन छाँड हौं बरआइ०

५ कृपा अवलोकन दान दे री०

६ यमुनाघाट रोकी हो रसिक०

राजभोग दर्शन।

१ चलन न देत हो यह बटिया०

भोग के दर्शन।

१ ये कौन प्रकृति तिहारी ललना०

२ आज वृंदावन में दधि लूटी०

संध्याभोग आये।

१ कहो जू दान बहो लैहो कैसे०

संध्या समय।

१ तुम चले जाओ ढोटा अपने मग०

शयनभोग आये।

१ घेरी घेरी व्रजनारी०

२ दधि न बेचिये हमारे कुल०

३ कुँवर कान्ह छाँडो हो०
४ गिरिधर कौन प्रकृति तिहारी०

भोगसरे।

१ अहो व्रजराइ०

शयन दर्शन।

१ कापर ढोटा नैन नचावत०
२ दान माँगत ही मैं आन कछु०

मान में।

१ नवल निकुंज नवल मृगनैनी नवल नेह तेरो लाग रह्यो री०

पोढवे में।

१ पोढे पिय मदनमोहन श्याम०

भाद्र० शु० १२ (श्रीवामनजयंती)

जन्म के पंचामृत समय—राग धनाश्री

१ प्रगटे श्रीवामन अवतार०

उत्सवभोग आये।

१ बलि के द्वारे ठाडे वामन०
२ राजा एक पंडित पौरि तिहारी०
३ मेरे क्यों आये विप्र वामन०

समय होय तो और भी गावने।
राजभोग आरती।

१ कृपा अवलोकन दान दे री०

भाद्र० शु० १३ राजभोग दर्शन।

१ बलि वामन हो जग पावन करन०

और एक दान को कीर्तन।
भोग के दर्शन।

१ ऐसो दान न माँगिये०

भाद्र० शु० १४ भोग के दर्शन।

१ श्रीवृंदाविपन सुहावनो०

भाद्र० शु० १५ मंगला दर्शन।

१ दान देहो गुजरेटी०

शृंगार समय।

१ गोवर्धन की शिखर ते हो०

शृंगार दर्शन।

१ कहो जू कैसो दान माँगिये हम देव पूजन आईं०

राजभोग आये, छाक के कीर्तन।
राजभोग दर्शन।

१ ए तुम पैंडोइ रोके रहत०

भोग के दर्शन।

१ ऐसो दान न माँगिये हो०

संध्या समय।

१ अहो विधिना तोपे अचरा०

शयन दर्शन।

१ कुंवर कान्ह छाँड़ो हो ऐसी बतियाँ०

मान० पोढवे में।

१ नवल निकुंज नवल मृगनैनी०
२ पोढिये लाल लाडिली संग ले०

आश्विन कृ० १ आज सूँ आश्विन कृ० ३० तक भोग तथा संध्या समय साँझी के कीर्तन और समय में दान के कीर्तन।

आश्विन कृ० ६ (श्रीबालकृष्णजी के उत्सव की बधाई)

मंगला दर्शन।

१ आज बधाई मंगलचार ०

शृंगार समय।

१ व्रज भयो महरि के पूत०
२ बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल०
३ श्रीवल्लभ निज नाथ०

४ चहुँजुग वेद वचन प्रतिपारयो०
५ जय श्रीलक्ष्मणसुवन नरेश०
६ जो पे श्रीवल्लभरूप न जाने०
सर्वोत्तम वधाई की ३५ तुक गावनी ।
७ जो पे श्रीविट्ठलनाथहि गावें०
नाम रत्न की बधाई की ३५ तुक गावनी ।
श्रृंगार दर्शन ।
१ यह सुख देखो री तुम माइ०
राजभोग आये ।
१ वधाई माइ आज०
सर्वोत्तम और रामरत्न की बधाई ।
छल्ली तुक राखके गावनी ।
राजभोग दर्शन ।
१ एहो ए आज नंदराय के०
सर्वो० नाम० की छल्ली तुक ।
भोग के दर्शन ।
१ सब मिल गाओ गीत बधाई०
संध्या समय ।
१ मेरे मन आनंद भयो०
शयनभोग आए ।
१ गावत गोपी मृदु०
२ प्यारे हरि को विमल यश०
३ श्रीलक्ष्मणगृह प्रगट भये है०
४ श्रीवल्लभलाल के गुण गाऊँ०
शयन भोगसरे ।
१ गाऊँ श्रीवल्लभनंदन के गुण०
शयन दर्शन ।
१ धर्म ही ते पायो०

पोंढवे में ।
१ धन रानी जसुमति गृह०
आश्विन कृ० १२ (श्रीगोपीनाथजी को उत्सव)
भाद्र० शु० ६ के समान
आश्विन कृ० १३ (श्रीबालकृष्णजी को उत्सव)
श्री के जागवे सूँ झाँझ पखावज
बजे, जागवे में ।
१ श्रीवल्लभ ३ गुण गाऊँ०
२ जयजय श्रीवल्लभप्रभु०
३ जागिये व्रजराजकुँवर०
४ छगन मगन प्यारेलाल०
५ जयजय श्रीसूरजा०
६ आज बडो दरबार०
७ माइ सोहिलरा आज०
भोगसरे ।
१ मंगल मंगलं०
मंगला दर्शन ।
१ नैन भरि देखो नंदकुमार०
श्रृंगार समय ।
१ व्रज भयो महरि के पूत०
२ बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल०
३ श्रीवल्लभ निज नाथ०
४ चहुँजुग वेद वचन प्रतिपारयो०
५ जे श्रीलक्ष्मणसुवन नरेश०
६ जोपे श्रीवल्लभरूप न जाने०, ३५ तुक
७ जोपे श्रीविट्ठलनाथहि गावे०, ३५ तुक
श्रृंगार दर्शन ।
१ यह सुख देखो री तुम माइ०
पादुकाजी कूँ स्नान होंय तब ।
१ आपुन मंगल गावे०

२ सब मिल मंगल गावो माई०

राजभोग आये।

१ मंगल मंगलं अखिलभुवि मंगलं०
२ जयति भट्ट लक्ष्मणतनुज०
३ प्रगट्या एमा श्रीवल्लभदेव०
४ सब ग्वाल नाचे०
५ श्रीलक्ष्मणगृह महामंगल भयो०
६ पोस निर्दोस०
७ भूतल महामहोत्सव आज०
८ सोवन फूलन फूली०
९ बधाई श्रीलक्ष्मणराजकुमार०
१० नंद बधाई दीजे हो ग्वालन०
११ तिहारे आयो पूत०
१२ महामंगल महराने०
१३ प्रगटे श्रीबालकृष्ण सुजान०
१४ भयो श्रीविट्ठल के मन मोद०
१५. १६ सर्वो० नाम० की छल्ली तुक राखके गानी
१७ भयो यह श्रीवल्लभ अवतार०
१८ अबके द्विजवर ह्वै सुख दीनों०
१९ अबके सबही रूप धरयो०
२० भागन वल्लभ जनम भयो०
२१ पोस कृष्ण नौमी को शुभ दिन०
२२ भागन वल्लभ भूतल आये०
२३ पुत्र भयो श्रीवल्लभ के गृह०

भोगसरे...पलना ४. ढाढी ५

१ वल्लभलाल पालने झूले०
२ अक्का जू ऐसो सुत जायो०
३ माइरी कमलनैन०
४ तुम व्रजरानी के लाला०
१ हों व्रज माँगने जू०
२ नंदजू मेरे मन आनंद भयो०
३ तिहारो ढाढी श्रीलक्ष्मणराज०
४ हों जाचक श्रीवल्लभ तिहारो०
५ नंदजू तिहारे सुख दुख गये०

राजभोग दर्शन।

१ एहो ए आज नंदराय०
२ नंदमहोत्सव हो बड़ कीजे०
३ तुम जो मनावत सोइ दिन आयो०
४ आज बधाई को दिन नीको०

सर्वो० नाम० की छल्ली तुक।

भोग के दर्शन।

१ सब मिल गावो गीत बधाई०
२ जोपे श्रीविट्ठल रूप न धरते०
३ नांतर लीला होती जूनी०
४ कृपासिंधु श्रीविट्ठलनाथ०

संध्या समय।

१ मेरे मन आनंद भयो०

शयनभोग आये।

१ गावत गोपी मृदु०
२ भक्त सुधा बरखन ही प्रगटे०
३ गाऊँ श्रीवल्लभनंदन के गुण०
४ श्रीलक्ष्मणगृह प्रगट भये हैं०
५ प्यारे हरि को विमल जस०
६ श्रीवल्लभलाल के गुण गाऊँ०
७ गये पाप ताप दूर देखत०

८ श्रीवल्लभनंदन चंद देखत०
९ श्रीविट्ठलनाथ चंद ऊग्यो जग में०
१० आनंद बधावनो०
११ जन्मत ही आनंद भयो०
१२ जनम लियो शुभ लगन बिचार०
१३ श्रीलक्ष्मणवर ब्रह्म धाम०
१४ प्रभु श्रीवल्लभगृह जनम लियो०
१५ श्रीविट्ठलनाथ बसत जिय जाके०
१६ आज धन भाग हमारे०

शयन दर्शन।

१ धर्म ही ते पायो०
२ तिहारो घर सुबस बसो०

पोढवे में उत्सव के पद।

आश्विन कृ० १४ बाललीला भाद्र कृ० १० के समान। विशेष में दान तथा साँझी, बाललीला ८ दिन तक गावें

आश्विन शु० १ मंगला दर्शन।

१ देखो देखो री नागरनट०

शृंगार समय तथा अभ्यंग।

१ कुँवर के संग डोलत नंदरानी०
२ कहा ओछी ह्वै है जात०
३ चलो राधिके सुजान०
४ श्यामा जू आज नागरीकिशोर०

शृंगार दर्शन।

१ नाचत है नागर बलवीर०

शृंगार समय आजसूँ नवमी तक नित्त एक विलास गावनों।

राजभोग आये छाक के कीर्तन।

राजभोग दर्शन।

१ बलिहारी रासबिहारिन की०
२ नाचत रास में लाल बिहारी०

भोग के दर्शन।

१ नागरी नटनारायन गायो०

संध्या समय।

१ गोपवधू मंडल मधि०

शयनभोग आये व्याह के कीर्तन।

शयन दर्शन।

१ गिड गिड थुंग थुंग०

मान पोंढवे में।

१ राधिका आज आनंद में डोले०
२ दोउ मिल करत भाँवते बतियाँ०

जा दिन सूँ शस्त्र धरे, तब भोग के दर्शन में एक दिन।

१ बालिनंदन बली विकट०

दूसरे दिन।

१ बालि के बाल एतो बोल०

संध्या समय भी करखा गवे।

आश्विन० शु० १० (दशहरा, अन्नकूट की बधाई)

मंगला दर्शन।

१ प्यारी भुज ग्रीवा मेल०

शृंगार समय।

१ कुँवर १ संग डोलत०
२ कहा ओछी ह्वै जैहै जात०

और रस के कीर्तन

शृंगार दर्शन।

१ उलटो झगा उलटी है सूथन०

ग्वाल बोले राग बिलावल की अलापचारी झाँझ पखावज सूँ

१ गोकुल को कुलदेवता०
२ नंदादिक मिल बैठे०

३ सात बरस को साँवरो०

४ बार बार हरि सिखवन लागे०

राजभोग आये।

१ गोद बैठ गोपाल कहत व्रजराज सों०

भोग सरे भीतर तिलक होय तब गोद बैठ या कीर्तन की तुक व्रजरानी कर आरती कर वे।

राजभोग दर्शन।

१ गोधन पूजो गोधन गावो०

उत्थापन भोग आये।

१ बालिनंदन बली०

२ बालि के बाल०

भोग के दर्शन में राग नट की आलापचारी।

जवारा धरे तब।

१ आज दशहरा शुभ दिन नीको गिरिधलाल जवारे बाँधत०

संध्याभोग आये।

१ सीतापति सेवक तोहि देखन०

२ कपि चल्यो सिय संबोधि के०

समय होय तो और भी करखा गावने।

संध्या समय।

१ जब कूद्यो हनुमान उदधि०

शयनभोग आये।

१ दूसरे कर बान न लैहों०

२ जिन मंदोदरी बरजे०

३ तब हौं नगर अजोध्या जैहों०

४ सो दिन त्रिजटी कहै०

शयन के दर्शन।

१ आज रघुपति चढ़े लंक गढ़ लेन कों०

२ जयति जयति श्रीहरि दास०

मान पोंढवे में।

१ बेग चल साज दल चतुर चंद्रावली०

२ चाँपत चरन मोहनलाल०

जा दिन सूँ शस्त्र धरे वा दिन सूँ मान में ये कीर्तन होय।

१ मानगढ़ क्यों हू न टूटत०

२ आलीरी मानगढ़ करे लिये०

३ बेग चल साज दल चतुर चंद्रावली०

आश्विन शु० ११ मंगला दर्शन।

१ चोवा में चहेल कहाँ गये०

आज सूँ पूनम ताँई रास और अन्नकूट के कीर्तन सब समय में भले ही होंय।

आश्विन शु० १२ (छप्पनभोग को उत्सव)

चैत्र कृष्ण १० समान।

आश्विन शु० १५ (शरद् को उत्सव)

मंगला दर्शन।

१ देखो देखो री नागरनट नृत्यत०

शृंगार समय।

१ चलहु राधिके सुजान०

२ श्यामाजू आज नागरीकिशोर०

३ बन्यो रास मंडल माधो गति में गति गति उपजावे हो०

शृंगार दर्शन।

१ नाचत है नागर बलवीर०

२ श्रीवृषभाननंदिनी नाचत रासरंगभरी०

राजभोग आये।

१ अन्नकूट कोटिक भाँतिन सों०

२ देखो री हरि भोजन खात०

भोगसरे।

१ आन और आन कहत०

अन्नकूट तक नित्त भोग आये और सरे
येही कीर्तन राजभोग दर्शन ।

१ बन्यो रासमंडल अहो जुवतिजूथ०

२ बलिहारी रासबिहारन की०

भोग के दर्शन ।

१ चलिये जू नेक कौतुक देखन०

२ उरझी कुंडल लट०

संध्याभोग आये ।

१ रास विलास गहे कर पल्लव०

२ ततथेई रासमंडल में बने नाचत०

संध्या समय ।

१ गोपवधूमंडल मधिनायक गोपाललाल०

शयन भोग आये ।

१ गिड् गिड् थुंग थुंग०

२ लाल संग रास रंग०

३ रसिकन रस भरे हो नृत्यत रासरंगा०

४ बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु०

५ बंसीबट के निकट हरि रास रच्यौ०

६ मंडल मध्य रंगभरे श्यामा श्याम राजे०

७ सुन धुनि मुरली हो बन बाजे०

८ अहो रैन रीझी हो प्यारे०

शयन दर्शन, बीडी अरोगे तब तक राग मालव की आलापचारी होय। वेणु धरे तब।

१ अलाग लागन उरप तिरप०

२ पूरी पूरनमासी०

३ रास रच्यौ हो श्रीहरि०

आरती समय ।

४ श्रीवृषभाननंदिनी हो नाचत लालन गिरिधरन संग०

पोंढवे में । झाँझ पखावज सूँ

१ शरद उजियारी हो कैसी नीकी०

२ दोउ मिल करत भावते बतियाँ०

कार्तिक कृ० १ मंगला दर्शन ।

१ देखो देखो री नागर नट०

शयन दर्शन ।

१ श्याम सजनो शरद रजनी०

२ अद्भुत नटभेष धरे यमुनातट०

पोंढवे में । शरद के समान

कार्तिक कृ० २ (श्रीगिरिधरलालजी के उत्सव) की बधाई भाद्र० शु० ६ के समान ।

कार्तिक कृ० ५ (श्रीगिरिधलालजी को उत्सव मंगला सूँ राजभोग तक भाद्र शु० ६ के समान)

भोग के दर्शन ।

१ श्याम खिरक के द्वारे करावत०

२ खिरक खिलावत गावत ठाड़े०

संध्या समय ।

१ खेली वही खेली गांग बुलाई धूमर धौरी०

शयन भोग आये ।

१ कान जगावन चले कन्हाई०

२ आज अमावस दीपमालिका०

३ आज कुहू की रात है माधो०

४ दीपत दिव्य दीपमालिका०

शयन दर्शन ।

१ मानत परव दिवारी को सुख०

मान, पोंढवे में ।

१ कोहि मिलन कों बहुत करत हैं०

२ वे देखो बरत जरोखन दीपक०

कार्तिक कृ० ७ (श्रीबालकृष्णलालजी के गादी
विराजे को उत्सव)

मंगला दर्शन।

१ बधाई मंगलचार०

शृंगार समय।

१ बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल०
२ प्रगटे श्रीवल्लभ निजनाथ०
३ गोद बैठ गोपाल कहत व्रजराज सों०

राजभोग आये

१ श्रीलक्ष्मण गृह महामंगल भयो०
२ आज कहा संभ्रम है तिहारे घर तात०
३ भयो श्रीविट्ठल के मन मोद०
४ प्रगटे श्रीबालकृष्ण सुजान०

राजभोग दर्शन।

१ बड़रिन कों आगे दे गिरिधर०
२ आज बधाई को दिन नीको०

भाग के दर्शन।

१ गाय खिलावत शोभा भारी०

संध्या समय।

१ गाय खिलावत मदनगोपाल०

शयनभोग आये।

१ कान जगावन चले कन्हाई०
२ आज अमावस दीपमालिका०
३ आज कुहू की रात है माधो०
४ जयति व्रजपुर सकल०

शयन दर्शन।

१ दीपत दिव्य दीपमालिका०
२ मानत परब दिवारी को सुख०

मान, पोंढ़वे में।

१ राय गिरिधरन संग राधिकारानी०
२ श्यामाजू दुलहिनी०

सेहरा धरैं तब राजभोग दर्शन।

१ बड़रिन कों आगे दे गिरिधर०

मुकुट धरैं तब राजभोग दर्शन।

१ गोवर्धन पूजा कर गोविंद०

कुलह धरे तब राजभोग दर्शन

१ चले री गोपाल गोवर्धन पूजन०

भोग समय तिवारी में विराजैं तो
भोग संध्या समय।

१ आज कहा संभ्रम है तिहारे घर तात०

कार्तिक कृष्ण १२ राजभोग दर्शन।

१ अपने टोल कहत ब्रजबासिया०

कार्तिक कृष्ण १३ शृंगार समय।

१ धन धोवत नंदरानी०
२ जसोदा मदनगोपाल बुलावे०
३ प्यारी अपनो धन जु सँवारे०
४ धनतेरस दिन अति सुखदाई०

कार्तिक कृष्ण १४ (रूपचतुर्दशी)

अभ्यंग समय।

१ न्हात बलकुँवर कुँवर गिरिधारी०
२ न्हात बलदाऊ कुँवर कन्हाई०
३ न्हवावत सुत को नंदरानी०
४ आज न्हाओ मेरे कुँवर कन्हाई०

राजभोग दर्शन।

१ गुड़ के गूँजा पूवा सुहारी०

पोंढ़वे में, उत्सव के कीर्तन।

कार्तिक कृ० ३० (दिवाली)

मंगला दर्शन।

१ पूजा विधि गिरिराज की०

श्रृंगार समय।

१ आज न्हात मेरे कुँवर कन्हैया०
२ घरी एक छाँड़ो तात विहार०
३ आज दिवारी बड़ो परब घर०
४ आज दिवारी मंगलचार०

श्रृंगार दर्शन।

१ यह दिवारी बरस दिवारी०

राजभोग आये।

१ पूजन चले नंद गिरिवर कों०
२ पूजा करी देव गोधन की०
३ पूज सबे रंग भीने०
४ अन्नकूट कोटिक भाँतनसों०
५ देखो री हरि भोजन खात०

भोगसरे।

१ आन और आन कहत०

राजभोग दर्शन।

१ फूले गोप ग्वाल घरघर ते०
२ गुर के गूजा पुवा सुहारी०

भाग के दर्शन।

१ श्याम खिरक के द्वारे करावत०
२ गाय खिलावत शोभा भारी०

संध्याभोग आये

१ खेली बहु खेली गांग बुलाइ धूमर धौरी०

संध्या समय।

१ नीकी खेली गोपाल की गैया०

कान जगावे पधारैं तब। राग कान्हरा की आलापचारी करके।

१ कान जगावन चले कन्हाई०
२ आज अमावस दीपमालिका०
३ आज कुहू की रात है माधो०
४ दीपत दिव्य दीपमालिका०

मंदिर में पधारते समय।

१ देखो इन दीपक की सुघराई०

हटरी में आरती को टकोरा होय तब।

१ सुरभी कान जगाय०
२ कान जगाय गोपाल मुदित मन०
३ मानत परब दिवारी को सुख०
४ दीप दान दे हटरी बैठे नवलराय०

पोंढवे के कीर्तन आज नहीं होंय।

कार्तिक शु० १ (अन्नकूट)

राजभोग आये।

१ अपने अपने टोल०
२ गिरि पर कोप के०

भोगसरे।

१ आन और आन कहत०

राजभोग दर्शन

१ गुड़ के गूंज पुवा सुहारी०

गोवर्धन पूजा करवे पधारे तब राग सारंग की आलापचारी

१ चले री गोपाल गोवर्धन पूजन०
२ बडरिन कों आगे दे गिरिधर०
३ गोवर्धन पूजा कर गोविंद०
४ खिरक खिलावत गायन ठाड़े०

पाछे पधारैं तब।

१ बने री गोपाललाल रस आवत०
२ आवत हैं गोकुल के लोचन०
३ आओ मेरे गोकुल के चंदा०

तिलक होय तब।

१ गोवर्धन पूज के घर आये०

संध्या समय।

१ जै जै जै मोहन बलबीर०

शयनभोग आये व्यारू के।

शयन दर्शन।

१ कान्ह कुँवर के करपल्लव पर०

पोढवे में उत्सव के।

कार्तिक शु० २ (भाई दूज यमद्वितीया)

मंगला दर्शन।

१ गोवर्धन नख पर धरचो मेरे०

शृंगार समय।

१ कुँवर के सँग डोलत०
२ कहा ओछी ह्वै जिन जात०
३ आओ गोपाल सिंगार बनाऊँ०
४ पीतांबर को चोलना०
५ बलिहारी गोपाल की०

शृंगार दर्शन।

१ आज बन्यो नवरंग पियारो०

तिलक होय तब।

१ आज दूज भैया की कहियत०

राजभोग आये।

१ लाडले गोपाल आज हमारे०
२ बल गइ श्याम मनोहर गात०
३ कहत प्यारी राधिका अहीर०
४ आज गोपाल पाहुने आये०

भोग सरे।

१ कर उठे दोउ भैया भोजन०
२ पान खवावत कर करबीरी०

राजभोग दर्शन।

१ आओ रे आओ भैया ग्वालो०
२ तारवतारो री ब्रजजन लोचन ही को०

भोग के दर्शन।

१ साँवरे बल गइ भुजन की०

संध्या समय।

१ जै जै जै मोहन बलबीर०

शयन दर्शन।

१ कान कुँवर के करपल्लव पर मानों गोवर्धन नृत्य करे०

पोंढवे में उत्सव के कीर्तन।

कार्तिक० शु० ७ मंगला दर्शन।

१ बलिहारी गोपाल की गोवर्धन०

शृंगार समय।

१ गोवर्धन धरनी धरयो०
२ गोवर्धन गिरि कर धरयो०

शृंगार दर्शन।

१ याते जिय भावे सदा गोवर्धनधारी०

राजभोग दर्शन।

१ तारवतारो री ब्रजजन लोचन ही०

भोग के दर्शन।

१ साँवरे बल गइ भुजन की०

संध्या समय।

१ चिरजीयो लाल गोवर्धनधारी०

शयन दर्शन।

१ सुरराज आज पायन परयो०

पोंढवे में इच्छानुसार।

कार्तिक० शु० ८ (गोपाष्टमी)

मंगला दर्शन।

१ चल री सेन दई ग्वालिन कों मोहनलाल०

श्रृंगार समय।

१ कुँवर के सँग डोलत०

२ कहा ओछी ह्वै जिन जात०

ग्वाल बोले राग आसावरी की आलापचारी करके।

१ प्रथम गोचारन चले कन्हाई०

२ चले बन गोचारन सब गोप०

३ मैया गाय चरावन जैहों०

४ व्रज तें व्रज कों चलत कन्हैया०

५ आज अति आनंदे व्रजराय०

६ सोहत लाल लकुट कर राती०

ग्वाल आरती समय।

१ चले हरि बच्छ चरावन माई०

राजभोग आये।

१ आगे आव री छकहारी०

२ पीत उपरना वारे ढोटा०

३ बंसीबट बैठे हैं नँदलाल०

४ बिहारीलाल आओ आइ छाक०

५ कुमुद बन भली पहुँची आय०

६ कौन बन जैहो भैया आज०

७ गोपाल आज कानन चले सकारे०

भोगसरे।

१ छाक खाय खाय धाय०

२ बैठे लाल कालिंदी के तीरा०

राजभोग दर्शन।

१ गोविंद चले चरावन गैया०

भोग के दर्शन।

१ धौरी धूमर कारी काजर०

२ गैया गई दूर टेरो जू कान्ह०

३ घेरी कीनी नंददुलारे०

४ ए हाँक हटक हटक गाय०

संध्या समय।

१ गोधन के पाछे-पाछे आवत०

शयनभोग आये।

१ कहो कहाँ खेले हो लालन०

२ लाल तुम कैसी गाय चराई०

३ मैया हौं न चरैहौं गैया०

४ मैया मैं कैसी गाय चराई०

५ धेनन को ध्यान निसदिन मेरे०

६ कैसे-कैसे गाय चराई हो गिरिधर०

शयन दर्शन।

१ आगे गाय पाछे गाय०

२ आओ मेरे गोकुल के चंदा०

मान पोढवे में।

१ काहे न बोलत नागरी बैना०

२ बलैया लैहों पोढ़ रहो घनश्याम०

कार्त्तिक शु० ११ (प्रबोधिनी)

मंगला दर्शन

१ गोविंद तिहारो स्वरूप निगम०

श्रृंगार समय।

१ कुँवर के संग डोलत०

२ कहा ओछी ह्वै जिन जात०

३ आओ गोपाल सिंगार बनाऊँ०

४ पीतांबर को चोलना०

देव जगे तब राग बिलावल की आलापचारी

१ जागे जगजीवन जगनायक०

उत्सवभोग आये।

१ आज प्रबोधिनी परममोद कर०

२ आज एकादशी०

३ सुकलपक्ष और सुकल एकादशी०

४ सुभग प्रबोधिनी सुभग आज दिन०

आरती समय ।

१ नंद को लाल उठ्यो जब सोय०

साँझ कूँ देव उठे तो भी ये कीर्तन राग बिलावल में होयँ ।

राजभोग आये ।

१ यह तो भाग्य पुरुष मेरी माइ०

२ सुतहिं जिमावत यशोदा मैया०

३ लाल को मीठी खीर जो भावे०

४ हरि भोजन करत विनोद सों०

भोगसरे ।

१ भोजन कर उठे दोउ भैया०

२ पान खवावत कर कर बीरी०

राजभोग दर्शन ।

१ क्रीडत मनिमय आँगन रंग०

भोग के दर्शन ।

१ आज माइ मनमोहन पिय ठाढ़े०

२ आज बने ब्रजराज कुँवर०

संध्या समय ।

१ कनक कुंडल कपोल मंडित०

शयन दर्शन राग मालव की आलापचारी माहात्म्य के कीर्तन ।

१ मोहन नंदराज कुमार०

२ पद्म धर्‍यो जन ताप निवारन०

३ वंदे धरन गिरिधर भूप०

४ चरनकमल जगदीश बंदौं जे गोधन०

जागरण ।

५ सोहत लाल पाग०

६ सोहत कनक कुसुम करन०

७ आज बने री लालन गिरिधारी०

८ तरुन तमाल तरे त्रिभंगी तरुन०

९ मोहनलाल के ढिंग ललना यों०

१० मेरे तो कान्ह हैं री प्रान सखी०

११ लाल की रूपमाधुरी०

१२ माइ बाँके लोचन नीके०

१३ तेरे सुहाग की महिमा

१४ जब जब देखो जाय०

१५ जिय की न जानत हो पिय०

१६ हस पीक डारी०

१७ नैन छबीले०

१८ आज बनी वृषभान कुँवरि की दूती०

१९ अधर मधुर पूरित मुखरित०

२० आज माइ बनेरी लाल गोवर्धन०

पहली आरती ।

२१ रसिकन रसभरे हो नृत्यत रासरंगा०

२२ बन्यो मोर मुकुट नटवर वपु०

२३ ढरारे प्रीतम तेरे नैन०

२४ ब्रज की पौर ठाढ़ो साँवरो०

२५ तेरी भौंह की मरोरन में०

२६ तू मोहिं कित लाइ०

२७ वारों मीन खंजन०

२८ पिय रसिया०

२९ प्यारी पिय कों बरज०

दूसरी आरती ।

३० लाल संग रास रंग

३१ गिड़ गिड़ थुंग थुंग०

तुलसीजी की सगाई होय, तब
१ धन धन माता तुलसी बड़ी
३२ तू चल सिंगार हार०
३३ हों तोसों कहा कहों०
३४ आज बनी कुंजेश्वर रानी०
३५ मिले पिय साँकरी गली०
३६ श्याम कपोलन में कनककुंडल०
३७ सिखवत केतिक रात गई०
३८ तेरे सिर कुसुम बिखर रहे भामिनी०
३९ विधाता विधहू जानी न जानी०
४० बदन कमल पर बैठे मानों०

तीसरी आरती।

४१ मोहन मुखारबिंद पर०
४२ लाड़िली न माने लाल आपुन०

दूसरी आरती पीछे जनाने चौक में
तुलसीजी की सगाई होय तब

१ धन धन माता तुलसी बड़ी०

कार्तिक० शु० १२ मंगलभोग आए कलेवा
तथा यमुनाजी के कीर्तन गाइके।

१ सखी मोहिं सोनो सीतल लाग्यो०
२ रैन बिदा होन लागी०
३ पाछली रात परछाँहिं०
४ आज नंदलाल मुखचंद नैनन०
५ जागे हो रैन०

मंगलभोगसरे।

१ मंगल मंगलं०

मंगला दर्शन।

१ मंगल आरती गोपाल की०
२ आज बधाई मंगलचार०

दर्शन मंगल भये पीछे।

१ लालन तहिं जाओ०
२ जान न पाये हो जु०
३ मोहन घूमत रतनारे नैन०
४ साँझ के साँचे बोल तिहारे०

राजभोग आये।

१ श्रीलक्ष्मण गृह महामंगल भयो०
२ शुभ वैशाख कृष्ण एकादशी०
३ जे वसुदेव किये पूरन तप०
४ श्रीवल्लभनंदन रूप अनूप०

भोगसरे।

१ गोवल्लभ गोवर्धनवल्लभ०

राजभोग दर्शन।

१ न्याय दीन दूल्हे हो नंदलाल०
२ बधाई को दिन नीको०
३ तिहारो घर सुबस बसो०

साँझ कूँ भाद्र० शु० ६ समान

कार्तिक० शु० १३ मंगला दर्शन।

१ चिरियन की चिहुचान सुन०

श्रृंगार समय।

१ ललिता जू के आज बधायो०
२ हित की बात कहत है मैया०

श्रृंगार दर्शन।

१ न्याय दीन दूल्हे हो नंदलाल०

राजभोग आये।

१ श्रीवृषभानुसदन भोजन कों०

राजभोग दर्शन।

१ राधेजू नव दुलही दूलह मदनगोपाल०

भोग के दर्शन ।

१ आज बने व्रजराज कुँवर०

संध्या समय ।

१ राधा प्यारी दुलहिनि जू को दुलहा०

शयन दर्शन ।

१ जुगल वर आवत है गठजोरे०

मान पोढवे में ।

१ राय गिरिधरन संग०

२ श्यामाजू दुलहिनी०

मार्ग० कृ० १ मंगला तथा शृंगार में व्रतचर्या के कीर्तन होयँ मार्ग० शु० १५ तक

मार्ग० कृ० ५. श्रीगिरिधरलालजी के उत्सव की बधाई भाद्र० शु० ६. समान

मार्ग० कृ० ८. श्रीगोविंदरायजी तथा श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव भाद्र० शु० ६. समान

मार्ग० कृ० ११. श्रीगोकुलनाथजी के उत्सव की बधाई आश्विन कृ० ६. समान

मार्ग० कृ० १३. श्रीघनश्यामजी को उत्सव० भाद्र० शु० ६. तथा वैशाख कृ० १०. समान

मार्ग० कृ० १४. श्रीगोकुलनाथजी को उत्सव. मंगला के दर्शन

१ बधाई मंगलचार०

फेर आश्विन कृ० १३ समान

मार्ग० शु० २. श्रीव्रजभूषणजी को उत्सव. भाद्र० शु० ६. समान विशेष में राजभोग दर्शन

१ श्रीवल्लभ श्रीलक्ष्मण गृह प्रगट०

मार्ग० शु० ४. श्रीमथुराधीश और श्रीद्वारकाधीश एक सिंहासन पे बिराजे। मंगला दर्शन ।

१ आज गृह नंद महर के बधाई०

शृंगार समय ।

१ नैनभर देखो नंदकुमार०

२ नंदराय के नवनिधि आई०

शृंगार दर्शन ।

१ न्याय दीन दूल्हे हो नंदलाल०

राजभोग आये ।

१ श्रीवृषभानु सदन भोजन कों०

भोगसरे ।

१ नंद तिहारे आयो पूत०

राजभोग दर्शन ।

१ धनि गोकुल जहाँ गोविन्द आये०

२ आज बधाई को दिन नीको०

भोग के दर्शन ।

१ बसो मेरे नयनन में यह जोरी०

२ दिन दूल्हे मेरो कुँवर कन्हैया०

संध्याभोग आये ।

१ तू बनरा रे बन बन आया०

संध्या समय ।

१ राधा प्यारी दुलहिन जू को दुलहा०

शयनभोग आये ।

१ प्यारे हरि को बिमल यश०

२ गावत गोपी मृदु मृदु बानी०

३ जन्मत ही आनंद भयो०

भोगसरे ।

१ धर्म ही ते पायो०

शयन दर्शन ।

१ ननहारो घर सुबस०

२ लालन की बातन पर बलि जैये०

मान पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।

मार्ग० शु० ७. (श्रीगुसाईंजी के उत्सव की बधाई तथा श्रीगोकुलनाथजी को उत्सव आश्विन कृष्ण ६ समान)

श्रीगुसाईंजी की बधाई में सेहरा धरे तब राजभोग दर्शन ।

१ प्रगटे श्रीविट्ठलेश चलो जहाँ जाइ मेरे नैनन को शृंगार दूलह कर पाइ०

भोग के दर्शन जन्माष्टमी समान ।

संध्या समय ।

१ जयति रुक्मिणीनाथ पद्मावतीप्राण-पति बिप्रकुलछत्र आनंदकारी०

और सब समय में ठाकुरजी तथा महाप्रभूजी की बधाई समान

टिपारा धरे तब सेन के दर्शन में ।

१ श्रीविट्ठलनाथ आनंदकंद०

पौष० कृ० ७. (छप्पन भोग० चैत्र कृ० १० समान)

पौष० कृ० ८. (वैशाख कृ० १०. समान)

पौष कृ० ६. (श्रीगुसाईंजी को उत्सव) शंखनाद सूँ झाँझ पखावज बजे

१ श्रीवल्लभ ३ गुण गाऊँ०

२ जेजे श्रीवल्लभ प्रभु विट्ठलेश साथे०

३ जागिये व्रजराजकुँवर कमल०

४ हों बलिबलि जाउँ कलेऊ लाल कीजे०

५ जेजे श्रीसूरजा कलिंदनंदिनी०

६ आज़ बड़ो दरबार देख्यो०

७ माइ सोहिलरा आज नंदमहर घर०

(और सब क्रम आश्विन कृ० १३. समान केवल राजभोग आये में १३. १४. नंबर के कीर्तन नहीं गवे)

पौष० कृ० १०. (भाद्र० कृ० १०. समान)

आठ दिन तक बाललीला गवे

पौष कृ० ११. (श्रीविट्ठलनाथजी के उत्सव की बधाई) आश्विन कृ० ६. समान

पौष कृ० १३. (वैशाख कृ० १०. समान)

पौष कृ. १४. (श्रीविट्ठलनाथजी को उत्सव)

मंगला दर्शन ।

१ बधाई मंगलचार०

आश्विन कृष्ण १३ समान ।

पौष कृ० ३०. बाललीला तथा ललित मालकोस के कीर्तन भेले होयँ ।

मकर संक्रांति. (एक दिन पहले भोगी संक्रांति)

शृंगार दर्शन ।

१ बनठन भोगी रस बिलसन कों०

राजभोग दर्शन ।

१ भोगी भोग करत सब रस कों०

२ क्रीडत मनिमय आंगन नंद०

भोग के दर्शन ।

१ आज माइ मनमोहन पिय ठाड़े०

२ भोगी भोग करत सब रस को० .

संध्या समय ।

१ कनककुंडल कपोलमंडित०

२ भोगी को रस बिलसत आवत०

शयन दर्शन ।

१ तेरी हौं बलि बलि जाउँ गिरिधरन

२ कहारी कहों मनमोहन को सुख०

मान पोढवे में ।

१ राधिका आज आनंद में डोले०

२ नीकी ऋतु लागे सीत की०

मकरसंक्राति. जागवे में ।

१ भोर भये भोगी रस बिलस भये ठाड़े०

मंगला दर्शन ।

१ तरनितनया तीर आवतहि प्रातसमय०

शृंगार समय ।

१ जान परब संक्रांति नंदघर०

२ बोल पठाइ श्यामपे जसुमति०

३ कहत नंदरानी गोपाल सों०

शृंगार दर्शन. ।

१ खेले साँवरो गोपाल गोपकुँवरन०

तिलवा भोग आये ।

१ आज भलो संक्रांति पुन्य दिन०

राजभोग आये ।

१ बैठे ब्रजराजगोद मोदसों गोपाललाल०

राजभोग दर्शन ।

१ ग्वालिन तैं मेरी गेंद चुराई०

२ खेलत में को कहां को गुसैयाँ०

३ देखो सखी मोहन मदनगोपाल०

भोग के दर्शन ।

१ तुम मेरी मोतिन लर क्यों तोरी०

संध्या समय ।

१ गहे रहे भामिनी की बाँह०

शयन के दर्शन ।

१ कान्ह अटा चढ़ि चंग उड़ावत०

२ खेलत गेंद रायआँगन में०

मान पोढवे में ।

१ आवत जात हों हार परी री०

२ गिरिधर शयन कीजे आय०

माघ. कृ. ४. (गुप्त उत्सव) राधाष्टमी तथा कार्त्तिक शु० १३. समान ।

माघ. कृ. ९. (श्रीविट्ठलनाथजी को जन्मदिन)

मंगला दर्शन ।

१ जन्मफल मानत यशोदा माय ।

शृंगार समय ।

१ नयन भर देखो नन्दकुमार ।

२ यह सुख देखोरी तुम माय ।

३ आज नन्दजू के द्वारेभीर ।

४ आनन्द आज नन्दजू के द्वार ।

शृंगार दर्शन ।

१ मोद विनोद०

राजभोग आये ।

१ धन्य यशोदा भाग्य तिहारे ।

२ गावो गावो मंगलचार ।

३ देखो अद्भुत अवगत की गति ।

४ देवक उदधि देवकी०

राजभोग सरे ।

१ जनमदिन लाल को फिर आयो ।

राजभोग दर्शन ।

१ आयुस आँगन बोले माई जसोदा ।

२ आज बधाई को दिन नीको ।

भोग के दर्शन ।

१ जायो पूत सुलच्छन ।

२ मंगल रूप निधान ।

संध्या समय ।

१ मेरे मन आनन्द भयो ।

शयन भोग आये ।

१ जन्मत ही आनन्द भयो ।

२ सो उपाय कछु कीजे ।

३ रावल के कहे गोप ।

४ भाग्य सबन तें न्यारे ।

शयन भोग सरे ।

१ आज धन्न भाग्य हमारे०

शयन दर्शन ।

१ यह धन धर्म ही तें पायो०

२ विट्ठलनाथ चंद उग्यो जग में०

३ विट्ठलनाथ बसत जिय जाके०

४ तिहारो घर सुबस बसो०

मान पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।

माघ शु० ४ । मंगला दर्शन ।

१ सिसिर ऋतु को आगम भयो०

शृंगार समय ।

१ मदनमत कीनो री मतवारो०

२ विधाता अबलन कों सुख दीजे०

शृंगार दर्शन ।

१ वसंत ऋतु आइ आये पिय घर०

राजभोग दर्शन ।

१ महल मेरे आये अति मनभाये०

भोग के दर्शन ।

१ सारंगनैनी री काहे कों कियो रागमाला०

संध्या समय ।

१ हरिजू राग अलापत गोरी०

शयनभोग आये ।

१ हिमऋतु अति हितकारी री सजनी०

२ हिमऋतु सिसिरऋतु अति सुखदाई०

३ ए मन मान मेरो कह्यो काहे कों रुसानी०

शयन दर्शन ।

१ आली री सज शृंगार सायंकाल०

२ मोहन मुखारविंद पर०

मान पोढवे में ।

१ राधिका आज आनंद में डोले०

२ नीकी ऋतु लागे सीत की०

माघ शु० ५ । (वसंतपंचमी)

मंगला दर्शन ।

१ सिसिरऋतु को आगम भयो प्यारी०

शृंगार समय ।

१ कुँवर के संग डोलत०

२ कहा ओछी ह्वै०

३ भोर भयो जागे जाम लाल०

भैरव की रागमाला ।

शृंगार दर्शन ।

१ वसंतऋतु आई आए पिय घर०

राजभोग आये ।

राग टोडी ।

१ परोसत गोपी घूँघट मारे०

२ परोसत पाहुनी ज्योनारे०

३ चित्र सराहत दुरमुर चितवत०

४ मोहन जेंवत एरी जिन जाओ०

भोगसरे ।

१ जेंवत मोहन खंभ की ओझल०

२ पान खवावत कर कर बीरी०

वसंत के दर्शन ।

झाँझ पखावज ।

रागवसंत की आलापचारी ।

१ हरिरिह व्रजयुवतीशतसंगे०

२ विहरति हरिरिह सरस वसंते०

उत्सव भोग आये ।

चौक में बैठके ।

१ गावत चली वसंत बधावो०

२ श्रीपंचमी परममंगल दिन०
३ कुचगडुवा०
४ लाल ललित ललितादिक०

राजभोग दर्शन।

१ गिरिधरलाल की बानक ऊपर०

भोग के दर्शन।

१ वसंत बधावो चली व्रज की नार०
२ देखो वृंदावन की कमलनैन०

संध्या समय।

१ नंद के द्वारे आइ हम०

शयनभोग आये.

१ राधेजू आज बन्यो है बसंत०
२ प्यारी नवल नव बन केलि०
३ प्यारी देख बन के चेन
४ प्यारी देख बन की बात०

भोगसरे।

१ आई ऋतु चहुँदिस०

शयन दर्शन।

१ एसो पत्र पठायो नृपवसंत०
२ गोवर्धन की शिखर चारुपर०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

माघ शु० ६. मंगला दर्शन।

१ खेलत बसंत निस पियसंग जागी०

शृंगार समय।

१ देखियत लाल लाल हग डोरे०

शृंगार दर्शन।

१ श्याम सुभग तन शोभित०

गोपीवल्लभ आये।

१ जसुदा नहिं बरजे अपनो बाल०

राजभोग आये।

१ रिंगन करत कान्ह आँनन में०
२ अद्भुत शोभा वृंदावन की०

भोगसरे।

१ एक बोल बोलो नंदनंदन० गोपीवल्लभ को, तीनों राजभोग के माघ शु० १५ तक नित गावनें और ग्वाल के दर्शन में डोल तक ये गावनो।

१ अति सुंदर मनजटित पालनो झूलत०

राजभोग दर्शन।

१ गुसाईंजी की अष्टपदी फाल्गुन. शु. १० तक गवे.
२ नावत चली बसंत०

फाल्गुन. कृ० ६. तक मंगला में वसंत के ये कीर्तन गवें।

१ खेलत वसंत निस पियसंग जागी०
२ आज कछु देखियत ओरहि बानक०
३ कोयल बोली सब बन फूले०
४ देखियत लाल लाल हग डोरे०
५ तेरे नैन उनीदे तीनपहर जागे०

वसंत सूं रोपणी तक. क्रीट धरैं तब.

शृंगार समय।

१ वंदों पदपंकज विठलेश०
२ गोपीजनवल्लभ जै मुकुंद०

शृंगार दर्शन।

१ वंदों पदपंकज नंदलाल०

राजभोग दर्शन।

१ नंदनंदन श्रीवृषभाननंदनी संग०

भोग के दर्शन।

१ राजा अनंग मंत्री गोपाल०

संध्या समय।

१ हरिजू के आवन की बलिहारी०

शयनभोग आये।

१ आयो ऋतुराज साजपंचम वसंत आज०

२ ऋतु वसंत वृंदावन बिहरत व्रजराज०

३ ऋतुवसंत तरुलसंत मनहसंत कामिनी०

४ ऋतुवसंत वृंदावनफूले द्रुम भाँतिभाँति०

शयन के दर्शन।

१ देखो वृंदावन की भूमि को भाग०

सेहरा धरे तब

शृंगार समय।

१ गावत चली वसंत बधावो०

शृंगार दर्शन।

१ आओ री आओ सब मिल गाओ री वसंतराग बधावो री कलस ले सब याम०

राजभोग दर्शन।

१ देखो राधामाधो सरम जोर०

२ और राग सब भये बराती०

भोग के दर्शन।

१ खेलत वसंत बलभद्रदेव०

संध्या समय।

१ बहुविध कला वन खेलो सघन द्रुम दूल्हे नंदकुमार०

शयनभोग आये।

१ वसंत पंचमी बसंत बधावो मोहन ठाढे०

२ बन ठन खेलन आये री वसंत०

शयन दर्शन।

१ खेलत बसंत दूल्हे हो गिरिधर दुलहिन राधा गोरी०

टिपारा धरें तब

राजभोग दर्शन।

१ उड़त बंदन नव अबीर बहु कुमकुमा०

२ नृत्यत गावत बजावत सासा गग मधमध०

भोग के दर्शन।

१ आज ऋतुराज सब साज शोभा छई०

संध्या समय।

१ हरि जू के आवन की बलिहारी०

शयनभोग आये।

१ देख री देख ऋतुराज आगम सखी०

शयन दर्शन।

१ वृंदावन विहस धाम बिहरत री श्यामा श्याम०

माघ शु.१४. (पूनम कूँ सबेरे होरी रुपे तो आज)

मंगला दर्शन।

१ तेरे नयन उनींदे तीन पहर जागे०

शृंगार समय।

१ चली है भरन गिरिधरनलाल को०

२ मोहन बदन बिलोकत अँखियन०

शृंगार दर्शन।

१ चटकीली चोली पहरे तन०

राजभोग दर्शन।

१ श्रीगुसाईंजी की अष्टपदी०

२ श्रीजयदेवजी की अष्टपदी ०।

३ गिरिधरलाल की बानक ऊपर०

साँझ कूँ वसंतपंचमी समान

माघ शु० १५. साँझ कूँ होरी रुपे तो

मंगला दर्शन।

१ खेलत वसंत निस पिय सँग जागी०

श्रृंगार समय।

१ आज सुभग दिन वसंत पंचमी०

२ आज वसंत सबे मिल सजनी पूजो मोहन०

श्रृंगार दर्शन।

१ आज वसंत बधावो हे श्रीवल्लभराज के द्वार०

राजभोग दर्शन।

१ श्रीगुसाईंजी अष्टपदी०

२ श्रीजयदेव अष्ट०

३ गिरिधरलाल की बानक ऊपर०

भोग के दर्शन।

१ देखत बने व्रजनाथ आज अति उपजत है अनुराग०

संध्या समय।

१ नंद के द्वारे आई हम०

शयनभोग आये।

होरी रोपवे जायँ तब श्री कूँ दंडवत् करके धमार।

१ ऋतु वसंत सुख खेलिए हो आयो०

जगमोहन में आयके पूरी करे।

शयन दर्शन।

१ खेलत फाग गोवर्धनधारी०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

माघ शु० १५. सबेरे होरी रुपे तो मंगलभोग आये, होरी रोपवे जायँ तब श्री कूँ दंडवत करके धमार।

१ घोष नृपतिसुत गाइए०

जगमोहन में आयके पूरी करे।

मंगला दर्शन। राग वसंत।

१ साँची कहो मनमोहन मोसों०

श्रृंगार समय।

१ घोष-नृपतिसुत गाइए०

श्रृंगार दर्शन।

१ होहो होरी खेले नंद को नवरंगी लाल०

राजभोग आये

१ रिझवत रसिक किशोर कों०

राजभोग दर्शन।

अष्टपदी गायके राग बिलावल की आलापचारी।

१ नंदसुवन व्रजभाँमते फाग संग मिल०

भोग संध्या समय।

१ ऋतु वसंत सुख खेलिए आयो फागुन मास०

शयनभोग आये।

१ ढोटा दोउ राय के०

शयन दर्शन।

१ खेलत फाग गोवर्धनधारी०

पोढवे में उत्सव के।

फाल्गुन कृष्ण २. (श्रीव्रजभूषणलालजी को जन्मदिन)।

मंगला दर्शन।

१ जन्मफल मानत यशोदामाइ०

श्रृंगार समय।

१ नन्दमहर के बधाई०

२ यह सुख देखो री तुम माई०

३ आज नन्दजू के द्वारे भीर०

४ मोर विनोद आज गृहनन्द०

५ (धमार) नन्दसुवन व्रजभाँमते०

६ आनन्द आज नन्दजू के द्वारे०

राजभोग आये।

१ धन्य यशोदा भाग्य तिहारे०

२ गाओ गाओ मंगलचार०

३ पुत्र भयो श्रीवल्लभ के गृह०

४ पोषकृष्ण नोमी को शुभ दिन०

५ (धमार) गोरे अंग ग्वालन०

राजभोग सरे।

१ बधाई०

राजभोग दर्शन।

१ श्रीलक्ष्मण कुल गाइए०

२ आज बधाई को दिन नीको०

भोग के दर्शन।

१ प्रथम सीस चरनन धर०

संध्या समय।

१ प्रथम सीस चरनन धर०

शयनभोग आये।

१ श्रीवल्लभकुलमंडन०

शयन दर्शन।

राल उड़े तब।

१ (बीड़ी अरोगैं तबतक) श्रीवल्लभकुलमंडन०

२ गिरिधरलाल रसाल खेलत रंग रह्यो०

३ धर्म ही ते पायो०

४ तिहारो घर सुवस बसो।

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

फाल्गुन कृष्ण ४, (श्रीगिरिधरलालजी को उत्सव)

मंगला दर्शन

१ खेलत वसंत निस पिय सँग जागी०

श्रृंगार समय।

१ घोष नृपतिसुत गाइए०

श्रृंगार दर्शन।

१ होरी खेले मोहना रंग भीने लाल०

राजभोग आये।

१ नंदसुवन ब्रजभाँमते०

राजभोग दर्शन।

१ श्रीलक्ष्मणकुल गाइए०

आरती समय।

२ बधाई को दिन नीको०

भोग के दर्शन, संध्या समय।

१ प्रथम शीश चरनन धर वंदों०

शयनभोग आये।

१ गोकुल गाम सुहावनो सब मिल०

२ श्रीवल्लभकुलमंडन प्रगटे श्रीविट्ठल-नाथ०

भोगसरे।

१ ललना खेले फाग बन्यो०

शयन दर्शन।

१ श्यामसुंदर मनभावते मनमोहना०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

फाल्गुन कृष्ण ७, (श्रीनाथजी को पाटोत्सव)

जगायबे में।

१ खिलावन आवेगी ब्रजनार०

मंगला दर्शन।

१ आज भोरही नंदपौर ब्रजनारिन रोर मचाई जू०

श्रृंगार समय।

१ खेलिए सुंदरलाल होरी०

२ घोषनृपतिसुत गाइये०

श्रृंगार दर्शन।

१ जिनडारो जिनडारो आँखिन में अबीरा०

गोपीवल्लभ सरे। भीतर खेल होय तब।

१ खेलत बल मनमोहना०

राजभोग आये

राग सारंग की आलापचारी।

१ सुरंगी होरी खेले साँवरो०

भोगसरे। तिलक होय तब।

१ गहि पाये हो मोहन अब मुख०

राजभोग दर्शन

राग आसावरी की आलापचारी।

आरती समय।

१ धन-धन नंद जसोमति हो धन०

२ रँगीले री छबीले नैना रसभरे०

भोग संध्या समय राग काफी की आलापचारी।

१ निकस कुँवर खेलन चले रंग होहो होरी०

शयनभोग आये। राग रायसा की आलापचारी।

१ सकल कुँवर गोकुल के०

शयन दर्शन। बीडी अरोगे तब।

१ श्रीगोवर्धनराय लाला०

राल उडे तब।

२ गिरिधरलाल रसाल खेलत रंग रह्यो०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

फाल्गुन कृष्ण ८. शृंगार समय।

१ धन-धन नंद जसोमति हो०

राजभोग दर्शन।

१ खेलत बल मनमोहना०

श्रीनाथजी के पाटोत्सव पीछे प्रथम मुकुट धरे तब।

मंगला दर्शन।

१ कुंज कुटीर मिल जमुनातीर खेलत०

शृंगार समय।

१ खेलत गिरिधर राधा नवनिकुंज मध होरी०

२ रविजातट कुंजन में गिरिधर०

शृंगार दर्शन।

१ रसिक फाग खेले नवल नागरी सों०

राजभोग आये।

१ ललना तुम मेरे मन अति बसो०

२ माधो चाचर खेलहीं०

राजभोग दर्शन।

१ एरी सखी निकसे मोहनलाल०

२ छाँड़ो-छाँड़ो हमारी बाट लंगर०

भोग के दर्शन।

१ बहुरि डफ बाजन लागे हेली०

संध्या समय।

१ होरी खेले लाल डफ बाजे ताल०

शयनभोग आये।

१ गिरिधर यमुनातट कुंजन में खेलत फाग०

२ गावत धमार आई०

शयन दर्शन।

१ खेलत फाग राग रंग बाजे मृदंग०

पाटोत्सव पीछे सेहरा धरें तब।

मंगला दर्शन।

१ आज भलो दिन हों बलिहारी नित्त सुहाग बढ़ैये होरी खेलन जैये०

शृंगार समय।

१ रस सरस बसो बरसानो जू०

२ हो मेरी आली भानुसुता के तीर०

शृंगार दर्शन।

१ तुम आओ री तुम आओ०

राजभोग आये ।

१ मोहन वृषभान के आये॰

२ सुंदरश्याम सुजान सिरोमनि॰

भोगसरे ।

१ नंदमहर को कुँवर कन्हैया॰

राजभोग दर्शन ।

१ नंदगाम को पांडे॰

भोग के दर्शन ।

१ श्रीगोकुलराजकुमार कमलदललोचना॰

संध्या समय ।

१ होरी हो होरी हो गोविंदजी होरी हो॰

शयनभोग आये ।

१ सकल कुँवर गोकुल के॰

भोगसरे ।

१ आवे रावल की ग्वार नार॰

शयन दर्शन ।

१ ए हो नवरंगी लाल विहारी॰

पाटोत्सव पीछे टिपारा धरे तब भोग के दर्शन में ।

१ आज बनठन खेलन फाग निकस्यो है नंददुलारो॰

संध्या समय ।

१ खेलत फाग फिरत रस फूले॰

शयनभोग आये ।

१ जब हरि हो हो होरी गावे॰

पाटोत्सव पीछे मान पोढवे में, फाल्गुन के भाव के कीर्तन होयँ ।

फाल्गुन कृष्ण १८. शृंगार समय ।

१ अरी मेरे नैन लगे व्रजपाल सों॰

शृंगार दर्शन ।

१ रंगीले री छबीले नैना रसभरे॰

राजभोग आये ।

१ लाल तैं प्यारी चित्त हर लियो तो बिन कछु न सुहाय॰

भोगसरे ।

१ श्यामा नकबेसर अति बनी॰

राजभोग दर्शन ।

१ सुरंगी होरी खेले साँवरो॰

२ अरे कारे प्यारे रतनारे भौंरा॰

भोग के दर्शन ।

१ बाघंबर ओढ़े साँवरी॰

संध्या समय ।

१ ओरन सों खेले धमार मोसों मुख हू न बोले॰

शयनभोग आये ।

१ खेलत है हरि हो हो होरी॰

शयन दर्शन ।

१ लिये सकल सोंज होरी की॰

फाल्गुन शुक्ल १. मंगला दर्शन ।

१ चलो सखी मिल देखन जैये नंद के लाल मचाई होरी॰

शृंगार समय ।

१ खेलिए सुंदर लाल होरी॰

२ परवा प्रथम कुँवर अति बिहरत गोपिन॰

शृंगार दर्शन ।

१ मन मेरे की इच्छा पूजी॰

राजभोग आये ।

१ चल री सिंहपौर चाचर मची॰

भोगसरे ।

१ अरी सुन डफ बाजे साजे गाजे मानों होरी आई रँगीली॰

राजभोग दर्शन।

आरती समय।

१ गोपी हो नंदराय घर माँगन०

२ होरी के रंगीले लाल गिरिधर रंग०

भोग के दर्शन।

१ परवा प्रथम कुँवर कों देखन चली व्रजनार०

संध्या समय

१ सखी आयो फागुन मास कहे सब होरी होरा०

शयन भोग आये।

१ खेलत है व्रजराजकुँवर वर हो हो बोलत डोलत घर घर०

शयन दर्शन।

१ फागुन मास सुहायो रसिया होरी खेलन आयो०

फाल्गुन शुक्ल ८, (होलिकाष्टक क्रम) पाटोत्सव पीछे प्रथम मुकुट धरे वाके समान। विशेष में राल उड़े तब।

१ गिरिधरलाल रसाल०

ये गवे पोढ़वे में उत्सव के कीर्तन होयँ।

फाल्गुन शुक्ल ११. (कुंज एकादशी)

मंगला दर्शन।

१ कुंज कुटीर मिल जमुनातीर खेलत होरी ०

शृंगार समय।

१ खेलत गिरिधर राधा नवनिकुंज मध०

२ रविजातट कुंजन में गिरिधर०

शृंगार दर्शन।

१ वन में श्रीवल्लभ बाला०

राजभोग आये।

१ प्यारी तैं मोहनमन हरयो०

२ अहो पिय लाल लडेती को झूमका०

३ ललना तुम मेरे मन अति बसो०

४ आज हरि कुंजन खेलत होरी०

राजभोग दर्शन। आज सूँ अष्टपदी बंद होय। राग देव गंधार की आलापचारी।

१ मदनगोपाल झूलत डोल०

२ झूलत दोउ नवलकिशोर०

३ झूलत हंससुता के कूल०

४ अद्भुत डोल बनी मनमोहन०

राग पंचम।

५ आज ललना लाल फाग०

राग जैतश्री।

६ शोभा सकल शिरोमणी०

धनाश्री।

७ झूलत युगकमनीय किशोर०

सारंग।

८ रंग उड़े तब झूलत हैं पियप्यारी०

सारंग।

९ डोल झुलावत लालबिहारी०

१० डोल झूलत है प्यारी लालबिहारी०

११ हरि को डोल देख व्रजबासी फूले०

भोग के दर्शन।

१ एरी सखी निकसे मोहनलाल०

संध्या समय।

१ होरी खेले लाल डफ बाजे ताल०

संध्या आरती पीछे जगमोहन में।

१ कुंज महल में ललना रसभरे०

शयनभोग आये । ओपटा राग गोरी ।

१ नवल कन्हाई हो प्यारे०

२ मनमोहना रसमत्त पियारे०

आज सूँ होरी तक ये दो कीर्तन नित्त होय । शयन दर्शन । राग हमीर कल्यान ।

१ डोल झूलत है गिरिधरन झुलावत बाला०

२ डोल चंदन को झूलत हलधर वीर०

३ डोल झूलत है प्यारो लालबिहारी०

आरती भये पीछे भीतर सूँ गुलाल हैं तब मुख पर लगाय के ।

१ कोइ अपनो बलम मोहि माँग्यो दे फागुन के ये गाइ के नाचनो

पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।

फाल्गन शु० १२. मंगला दर्शन ।

१ लरकवा काल जायगी होरी०

शृंगार समय ।

१ बरसाने की गोपी माँगन०

शृंगार दर्शन ।

१ लाल कों रंगन रगमंगो कीजे०

राजभोग आये ।

१ खेले चाचर नरनारि माइ होरी रंग०

२ प्यारो नंदमहर की पौरि ठाडो०

भोगसरे ।

१ अरी सुन डफ बाजे०

राजभोग दर्शन । कुंजएकादशी के समान । भोग संध्या समय ।

१ कछु दिन व्रज औरे रहो हरि होरी है०

शयन भोग आये सूँ कुंजएकादशी के समान ।

फाल्गन शुक्ल १३. (बागीचा)

मंगला दर्शन ।

१ आज भलो दिन हों बलिहारी०

शृंगार समय ।

१ नंदगाम को पांडे०

शृंगार दर्शन ।

१ हो हो हो कहि बोले गूजरि जोबन मदमाती०

राजभोग आये ।

१ रहसि घर समधिन आई ०

२ नंदमहर को कुँवरकन्हैया होरीखेलना०

भोगसरे ।

१ नंदकिशोर किशोरी जोरी०

बगीचा में भोग आये ।

१ आज हरि कुंजन खेलत होरी०

२ हरि खेलत व्रज में फाग अतिरस०

३ अहो पिय लाल लड़ैती को झूमका०

राजभोग दर्शन (कुंज-समान)

भोग संध्या समय ।

१ श्रीगोकुलराजकुमार कमलदललोचना०

संध्या आरती पीछे निजमंदिर में पधारैं तब ।

१ संग सखन कों ले जु विपिन मध्य०

शयनभोग आये । कुंज समान और—

१ सकल कुँवर गोकुल के०

शयन दर्शन ।

१ झूलत डोल दोउ मिल०

राल उड़े तब ।

२ डोल झूलत है प्यारो लाल बिहारी०

फाल्गुन शु० १४. मंगला दर्शन ।

१ चौंक परी गोरी होरी में०

शृंगार समय । राग आसावरी ।

१ बरसाने ते राधिका हो खेलन०

राजभोग आये।

१ जहाँ रहत नहीं कछु कान एसो खेल०

भोगसरे।

१ खेलत बसंत पिय प्यारी०

राजभोग दर्शन। कुंज समान।

भोग के दर्शन।

१ समधानेते ब्राह्मण आयो भर होरीके बीच०

संध्या समय।

१ भरो रे न भरो रे न भरो रे लंगरवा०

शयनभोग आये सूँ कुंज-समान।

फाल्गुन शुक्ल १५। होरी।

मंगला दर्शन।

१ आज माह मोहन खेलत होरी०

शृंगार समय।

१ खेलिए सुंदरलाल होरी०

२ बरसाने की गोपी माँगन फगुवा०

शृंगार दर्शन।

१ होरी के रँगीले लाल गिरिधर रंग०

राजभोग आये।

१ रहसि घर समधिन आई०

२ मोहन वृषभान के आये०

भोगसरे।

१ अरी सुन डफ बाजे०

राजभोग दर्शन। कुंज समान

आरती पीछे।

१ होरी के रंगीले लाल गिरिधर रंग०

भोग संध्या समय।

१ कछु दिन व्रज और रहो हरि होरी हैं०

शयनभोग आये। कुंज समान और—

१ ढोटा दोउ राय के०

शयन दर्शन। कुंज समान। फगुवा नाचे पीछे सान्निध्य में।

१ कोउ भलो बुरो जिन मानो अब०

पाढवे में उत्सव के कीर्तन।

चैत्र कृ० १. (डोल का उत्सव)।

मंगला दर्शन।

१ आज माह मोहन खेलत होरी०

शृंगार समय।

१ खेलिए सुंदरलाल होरी०

२ घोषनृपतिसुत गाइए०

राजभोग दर्शन।

१ होरीके रंगीलेलाल गिरिधर रंग मचायो०

श्रीठाकुरजी डोल में पधारे तब राग देव गंधार की आलापचारी

प्रथम दर्शन खुले।

१ मदनगोपाल झूलत डोल०

२ अद्भुत डोल बनी मनमोहन०

भोग आये।

१ डोल माई झूलत है व्रजनाथ०

२ झूलत डोल दोउ अनुरागे०

३ झूलत फूलमई अतिभारी०

४ मोहन झूलत बढ्यो आनंद०

दूसरे दर्शन।

१ डोल माई झूलत है नंदलाल०

२ झूलत हंससुता के कूल०

भोग आये।

१ झूलत डोल नंदकिशोर०

२ झूलत सुंदर जुगलकिशोर०

३ झूलत डोल जुगुलकिशोर०

४ झूलत दोऊ नवलकिशोर०

तीसरे-दर्शन ।

१ आज ललना लाल फाग खेलत बने०
२ शोभा सकलशिरोमनी हो०
३ झूलत युग कमनीयकिशोर०

चौथे दर्शन । राग सारंग की आलापचारी

१ डोल झूलत है पिय प्यारी०
२ डोल झुलावत लालविहारी०
३ डोल झूलत है प्यारो लालविहारी
४ हरि को डोल देख व्रजवासी०
५ राग नट । खेल फाग फूल बैठे०
६ हस मुसक्याय परस्पर डोल झूलत हैं०
७ डोल झूलत है व्रजयुवतिन के संग०
८ राग हमीर । डोल चंदन को०
९ गिरिधरन नवल नंदलाल०
१० अब ए हो राग रस रह्यो डोल झूलत०

फगुवा दें तब ।

१ गोपी हो नंदराय घर माँगन०

आरती-समय ।

१ तिहारो घर सुबस बसो०

भोग-दर्शन । तमूरा सूँ ।

१ तैं री मोहन को मन हरलीनो०

संध्या-समय ।

१ मिस ही मिस आवे घर नंदमहर के०

शयनभोग आये ब्यारू के कीर्तन ।

शयन-दर्शन ।

१ कुंजमहल में ललना रसभरे बैठे०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।

होली और डोल के बीच में खाली दिन होय तो ।
मंगला, शृंगार, राजभोग आये में धमार ।

राजभोग-दर्शन में डोल ।

भोग, संध्या, शयन-भोग आये में धमार ।

शयन में डोल ।

पोढवे में फागुन के भाव के ।
डोल के दिन साँझ कूँ होली होय तो—
डोल की आरती तक डोल के समान ।
पीछे भोग दर्शन और संध्या समय ।

१ सब दिन तुम व्रज में रहो०

झाँझ पखावज सूँ शयन तक ।

शयन-भोग आये ।

१ ढोटा दोउ राय के०

शयन-दर्शन ।

१ कोउ भलो बुरो जिन मानो०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।

चैत्र कृष्ण २. (द्वितीया पाट) ।

जागवे में ।

१ भोर भये जसोदाजू बोले जागो मेरे०

मंगला-दर्शन ।

१ मंगलकरन हरन-मन आरत०

शृंगार-समय ।

१ कुँवर के संग डोलत नंदरानी०
२ कहा ओछी ह्वै जैहै जात०
३ रसिकशिरोमनि नंदलाल लाल रंग०
४ चार पहर रसरंग किये रंगभीने लाल०
५ जागत सबनिस गतभइ रंगभीने०
६ राधा के रसबस भये रंगभीने हो०

शृंगार-दर्शन।

१ आज और काल और०

राजभोग आये छाक के कीर्तन।

राजभोग-दर्शन।

१ लाल नेक देखिये भवन हमारो०

२ चक्र के धरनहार०

३ फूलन की मंडली मनोहर बैठे मदन-मोहन पिय राजत०

भोग के दर्शन।

१ देखो सखि राजत है नंदलाल०

संध्या-समय।

१ बेन माह बाजत री बंसीबट०

शयन-दर्शन।

१ कुंजमहल में ललना रसभरे बैठे है पिय प्यारी०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

डोल पीछे मुकुट धरैं तब—

मंगला-दर्शन।

१ श्रीवृन्दावन नवनिकुंज ठाढे उठ भोर०

शृंगार-समय।

१ बने आज नंदलाल सखि प्रेममादक पिये संग ललना लिये यमुनातीरे०

२ नवल ब्रजराज को लाल ठाढो सखी ललित संकेत बट निकट सोहे०

शृंगार-दर्शन।

१ देख री देख नवकुंज घन सघनतर ठाढे गिरिवरधरन रंगभीने०

राजभोग-दर्शन।

१ वृन्दावन सघन कुंज माधुरी लतान तर यमुनापुलिन में मधुर बाजे बाँसुरी०

अथवा।

१ वृन्दावन सघन कुंज माधुरी द्रुम भँवर गुंज नित्यविहार प्रियाप्रीतम०

अथवा।

१ मुकुट की छाँह मनोहर किये०

भोग के दर्शन।

१ तरु तमाल तरे त्रिभंगी तरुन कान्ह कुँवर०

संध्या-समय।

१ आज नंदलाल प्यारो मुकुट धरे। श्रवनन लसत मकराकृत कुंडल रति-पति मन जु हरे०

अथवा।

१ आज नंदलाल प्यारो मुकुट धरै। श्रवनन लसत मकराकृत कुंडल काछनी कटि बरन०

शयन-दर्शन।

१ एरी चटकीलो पट लपटानो०

अथवा।

१ एहो आज रीझी हो तिहारी०

१ चलो क्यों न देखे री खरे दोउ कुंजन०

पोढवे में।

१ ऋतू अंग अंगरानी०

२ आज बनी कुंजेश्वर रानी०

टिपारा धरै तब—

राजभोग-दर्शन।

१ गोकुल राजकुमार सों मेरो मन०

शयन-दर्शन।

१ टेढी टेढी पगिया मन मोहे०

चैत्र कृष्ण ६. (गुप्त उत्सव) ।

मंगला दर्शन ।

१ बधाई मंगलचार०

पीछे आश्विन कृष्ण १३ समान ।

चैत्र कृष्ण १०. (छप्पन भोग को उत्सव) ।

मंगला-दर्शन ।

१ बधाई मंगलचार०

शृंगार समय ।

१ बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल०

२ चहुँजुग वेद वचन प्रतिपारयो०

३ श्रीगोकुल घर घर अति०

४ अब के द्विजवर ह्वै सुख दीनो०

शृंगार-दर्शन ।

१ महामहोत्सव श्रीगोकुलगाम०

राजभोग आये ।

१ श्रीवृषभान सदन भोजन कों०

२ बैठी गोपकुँवर की पाँत०

राजभोग-दर्शन ।

१ आज महामंगल महराने०

भोग के दर्शन ।

१ ना तर लीला होती जूनी०

२ जोपे श्रीवल्लभ प्रगट न होते०

संध्या-समय ।

१ हों चरनातपत्र की छैयाँ०

शयन-दर्शन ।

१ श्रीलक्ष्मणगृह प्रगट भये हैं०

२ जुग जुग राज करो०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।

चैत्र शुक्ल १. (संवत्सर)

जागवे में ।

१ भोर भये जसोदाजू बोलै जागो मेरे गिरिधरलाल०

मंगला-दर्शन ।

१ मंगलकरन हरन मन आरत०

शृंगार-समय ।

१ कुँवर के संग डोलत०

२ कहा ओछी ह्वै जैहै जात०

३ प्रात समय उठ यशोमति जननी गिरिधर सुत कों उबटि न्हवावे०

शृंगार-दर्शन ।

१ आज को सिंगार सुभग साँवरे०

राजभोग आये छाक के कीर्तन ।

राजभोग दर्शन ।

१ बैठे हरि कुंज नवरंग राधे संग पहर छूटे बंद०

२ चक्र के धरनहार०

३ चैत्र मास संवत्सर पडवा बरस प्रवेश०

४ फूलमंडली को कीर्तन०

भोग के-दर्शन ।

१ आज मनमोहन पिय बैठे सिंहद्वार०

संध्या-समय ।

१ श्याम सुभग तन झांई०

शयन दर्शन ।

१ कहि न परे लाडिले लाल की बंदिस०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन ।

चैत्र शुक्ल ३. (गनगोर) ।

जागवे में

१ जगावन आवेगी व्रजनारि अति रस रंग भरी०

मंगला-दर्शन ।

१ माइ आज लाल लटपटात आये०

२ ठाडे कुंजद्वारपियप्यारी करत०

शृंगार-समय ।

१ राधा माधो कुंज बुलावे०

२ बोलत श्याम मनोहर बैठे०

३ आज तन राधा सजत सिंगार०

४ कहत जसोदा सब सखियन सों०

५ अरबीलो गरबीलो रँगीलो छबीलो कान्ह०

शृंगार दर्शन ।

१ आज कोमलअंग ते व्रजसुंदरी रसिक०

२ भोर निकुंजभवन पियप्यारी०

राजभोग आये ।

१ रँगीली तीज गनगोर आज चलो०

२ नवल निकुंज महल मंदिर में जेमन बैठे०

३ मुदित व्रजनागरी पहर नये नये वसन०

४ तीज गनगोर त्योहार को जान०

५ नंदघरुनि वृषभानघरुनि मिल कहत०

६ सजि सजि आईं सकल व्रजनारी०

७ सहेली मेरे आज तो रँगीली गनगोर०

भोगसरे ।

१ जल अचवाय लाल लाडिली कों०

राजभोग-दर्शन ।

१ आज की बानिक कही न जाय बैठे निकस०

२ सघन कुंजभवन आज फूलन की मंडली०

३ राधा नवल लाडिली भोरी०

भोग के दर्शन ।

१ राधा कौन गोर तैं पूजी वृंदावन गोकुल गलियन में०

२ राधा कौन गोर तैं पूजी नंदनंदन व्रज-चंद ललन की०

संध्याभोग आये ।

१ बनठन आइ रँगीली गनगोर०

संध्या-समय ।

१ दुहिवो दुहायवो०

२ तीज गनगोर त्योहार को जान दिन०

शयनभोग आये ।

१ देखि गनगोर गहि अंगुरी बल मोहन०

२ देखि गनगोर पिय प्यारी नव०

शयन-दर्शन ।

१ ऋतु अंग अंगरानी०

२ बनठन व्रजराजकुँवर बैठे सिंहद्वार०

मान ।

१ तो-सी तिया नहीं भवन भट्टू री०

२ धन्य वृंदाविपिन धन्य गोकुलगाम०

पोढवे में ।

१ कुंज में पोढे रसिक पिय प्यारी०

२ नंदनंदन श्रीवृषभाननंदिनी संग०

चैत्र शुक्ल ४. जागवे में।

१ प्रात समै जागी अनुरागी सोवत हुती०

मंगला-दर्शन।

१ प्यारी के महल तें उठ चले भोर०

शृंगार-समय।

१ तैं गोपाल हेत नील कंचुकी रँगाय०

२ मैं तेरी अधिक चतुराई जानी०

३ कंचुकी के चंद तरक तरक०

शृंगार-दर्शन।

१ आज कोमल अंग तें ब्रजसुंदरी रसिक०

चैत्र शुक्ल ६. (श्रीरघुनाथजी को उत्सव) क्रम भाद्र शुक्ल ६. के समान।

चैत्र शुक्ल ८. (श्रीव्रजभूषणजी को उत्सव) क्रम भाद्र शुक्ल ६. के समान।

चैत्र शुक्ल ९. रामनवमी (श्रीव्रजभूषणजी को उत्सव)।

मंगला-दर्शन।

१ वधाई मंगलचार०

पंचामृत-समय।

१ नवमी चैत की उजियारी०

शृंगार-समय।

१ कौशिल्या रघुनाथ को लिये गोद०

२ सुभग सेज शोभित कौशिल्या०

३ गावत-राम जनम की गाथा०

४ राम-जनम मानत नँदराय०

५ सब सुख चाह रही है राम की०

६ श्रीरघुनाथ पालने झूले कौशिल्या०

७ कनक रत्न मनि पालनो रच्यो अमर सुभढार०

राजभोग आये।

१ भोजन लाव री तू मैया०

जन्म-पंचामृत समय।

१ प्रगट भये है राम माइ०

उत्सवभोग आये।

१ नौमी के दिन नौबत बाजे०

२ कोशलपुर में बजत बधाई०

३ आज महामंगल कोशलपुर सुन नृप के सुत०

४ आज सखी रघुनंदन जाये०

५ आज अजोध्या प्रगटे राम०

६ आज अजोध्या माँझ बधाई०

७ फूले फिरत अजोध्यावासी०

८ आनंद आज नृपति दशरथ-घर०

राजभोग-दर्शन।

१ एहो ए आज नंदराय के आनँद०

साँझ कूँ भाद्र० शुक्ल ६ के समान।

चैत्र शुक्ल १०. मंगला-दर्शन।

१ फूलन की माला हाथ फूली फिरें आली साथ०

शृंगार-समय।

१ सुन सुत एक कथा कहौं प्यारी०

२ बात कहौं एक हित की तोसों०

चैत्र शुक्ल ११. (श्रीमहाप्रभुजी के उत्सव कीग बधाई)।

मंगला-दर्शन।

१ बधाई मंगलचार०

शृंगार-समय।

१ व्रज भयो महर के पूत०

२ भूतल महामहोत्सव आज०

३ आज गृह नंदमहर के बधाई०

४ भयो जगती पर जयजयकार०

५ जनमफल मानत जसोदा माय०

६ जय श्रीलक्ष्मण राजकुमार०

७ जोपे श्रीवल्लभरूप न जाने० ३० तुक०

शृंगार-दर्शन।

१ यह सुख देखो री तुम माइ०

राजभोग आये।

१ जुर चली है बधावन नंदमहर घर०

२ जोपे श्रीवल्लभरूप न जाने० (छट्ठी (तुक) राख के०)

राजभोग-दर्शन।

१ एहो ए आज नंदराय के०

२ जोपे श्रीवल्लभ० की (छट्ठी तुक)

भोग-दर्शन।

१ सब मिल गावो गीत बधाई०

संध्या-समय।

१ मेरे मन आनंद भयो०

शयन-भोग आये।

१ गावत गोपी मृदु मृदु बानी०

२ प्यारे हरि को विमल यश०

३ भक्तिसुधा बरषत ही प्रगटे०

४ श्रीलक्ष्मण गृह प्रगट भये हैं०

शयन-दर्शन।

१ धर्म ही ते पायो०

पोढवे में।

१ धन रानी जसुमति गृह आवत०

चैत्र शुक्ल १५. (छप्पनभोग-उत्सव) चैत्र कृष्ण १० के समान।

श्रीमहाप्रभुजी की बधाई में मुकुट धरैं तब—

शृंगार-समय।

१ चोकडा। धन धन माधवमास एकादशी, प्रगटे श्रीवल्लभ सुखरासी०

२ चोकडा। श्रीलक्ष्मण गृह बधाये, श्रीवल्लभ भूतल आये०

शृंगार-दर्शन।

१ जय श्रीवल्लभदेव धनी०

अथवा।

२ नंदराय के नवनिधि आई०

राजभोग-दर्शन।

१ एसी बंसी बाजी०

अथवा।

२ जयति भट्ट लक्ष्मणतनुज०

भोग-दर्शन।

१ चोकडा, (राग धनाश्री) माधव मासे भर वैशाखे०

संध्या-समय।

१

शयनभोग आये।

१ श्रीवल्लभ मधुराकृति मेरे०

२ प्रगट ह्वै मारग रीत बताई०

शयन-दर्शन।

१ श्रीलक्ष्मणवर ब्रह्मधाम काममूरत०

अथवा।

२ मधुर व्रजदेश बस मधुर कीनो०

सेहरा धरैं तब—

शृंगार समय।

१ मूल पुरुष नारायण यज्ञ०

राजभोग आये।

१ नंदरानी सुत जायो महर के मंदिर वेग चलो०

राजभोग दर्शन।

१ केसर की धोवती पहरे०

भोग-संध्या समय।

१ हेरी हेरी रे भैया हेरी हेरी रे। हेरी दे किन गावहीं हो भलो बन्यो है काज०

शयन-भोग आये।

१ हेरी हेरी रे भैया हेरी हेरी रे। सकल काज पूरन भये०

२ एरी चल जायँ जहाँ हरिवदनानलभुव आये०

वैशाख कृष्ण ७०. (श्रीमथुरेशजी श्रीद्वारकाधीश एक सिंहासन पे बिराजे (मग० शुक्ल ४ के समान)।

वैशाख कृष्ण १०. मंगला-दर्शन।

१ माइ मोहिलरा आज नंदमहर घर०

शृंगार-समय।

१ आज वन कोउ वे जिन जाय०

२ जनमफल मानत जसोदा माय०

३ द्वारे आय गुनीजन ठाडे०

शृंगार-दर्शन।

१ बाजे बाजे मंदिलरा सकल व्रज घोष सुहायो गाजे०

राजभोग आये।

१ ग्वाल बधाई माँगन आये०

२ नंद बधाई बाँटत ठाडे०

३ नंद-वृषभान के हम भाट०

४ श्रीव्रजराज के हम ढाढी०

५ नंदजू तिहारे सुख दुख गये सबन के०

राजभोग दर्शन।

१ सब ग्वाल नाचे गोपी गावे०

भोग के दर्शन।

१ आज अति बाढ्यो है अनुराग०

२ रानीजू जायो पूत सुलच्छन०

३ कन्हैया कब चल है पायन०

संध्या-समय।

१ आज बधावो श्रीव्रजराज के०

शयन-भोग आये।

१ आज तो मंदिलरा बाजे मंदिर०

२ माइ आज तो गोकुलगाम कैसो०

३ श्रवन सुन सजनी बाजे मंदिलरा०

भोगसरे।

१ दान देत श्रीलक्ष्मण प्रमुदित मनि-मानक कंचन पट गाय०

शयन-दर्शन।

१ रावल के कहे गोप०

पोढवे में।

१ धन रानी जसुमति गृह०

वैशाख कृष्ण ११. (श्रीमहाप्रभुजी को उत्सव)।

जागवे सूँ झाँझ पखावज सूँ कीर्तन होय।

१ श्रीवल्लभ ३ कृपानिधान अतिउदार०

२ श्रीवल्लभ ३ गुण गाऊँ०

३ जागिये व्रजराजकुँवर०

४ छगन मगन प्यारेलाल०

५ जय जय श्रीसूरजा कलिंदनंदिनी०

६ आज बड़ो दरबार देख्यो०

७ माइ सोहेलो आज नंदमहर घर०

मंगल भोगसरे।

१ मंगलमंगलं०

मंगला-दर्शन ।

१ नैंन भर देखो नंदकुमार०

शृंगार-समय ।

१ व्रज भयो महर के पूत०
२ प्रगटे श्रीवल्लभ निजनाथ०
३ आज गृह नंदमहर के बधाई०
४ आज जगती पर जयजयकार०
५ जय श्रीलक्ष्मणसुवन नरेश०
६ जोपे श्रीवल्लभरूप न जाने०(३५ तुक)
७ यह सुख देखोरी०

पादुकाजी कूँ पंचामृत होय तब ।

१ आपुन मंगल गावे०
२ सब मिल मंगल गावो माइ०

राजभोग आये ।

१ मंगलमंगलं०
२ जयति भट्टलक्ष्मणतनुज०
३ प्रगट्या ए मा श्रीवल्लभदेव०
४ सब ग्वाल नाचे गोपी गावे०
५ श्रीलक्ष्मण गृह महामंगल भयो०
६ धन्य माधवमास कृष्ण०
७ भूतल महामहोत्सव आज०
८ सोवन फूलन फली०
९ जय श्रीलक्ष्मण राजकुमार०
१० महामंगल महराने०
११ नंद बधाई दीजे हो ग्वालन०
१२ नंदजू तिहारे आयो पूत०
१३ जोपे श्रीवल्लभ रूप न जाने०

छल्लीतुक राखनी ।

१४ भयो यह श्रीवल्लभ अवतार०
१५ वल्लभ भूतल प्रगट भये०
१६ जब तें वल्लभ भूतल प्रगटे०
१७ भागन वल्लभ जनम भयो०
१८ प्रगट भये प्रभु श्रीमद्वल्लभ व्रजवल्लभ०
१९ भागन वल्लभ भूतल आये०
२० श्रीवल्लभ श्रीलक्ष्मणगृह प्रगटभये माँह०
२१ फल्यो जन भाग्य पथपुष्टि०
२२ तत्त्व गुण बाण भुवि माधवासित०
२३ सुखद माधवमास०
२४ कांकरवार तैलंगतिलक द्विज०

भोगसरे ।

१ पलना । झूलो पालने गोविंद०
२ श्रीवल्लभलाल पालने झूले०
३ माइ री कमलनैन श्यामसुंदर०
४ तुम व्रजरानी के लाला०
५ ढाढी । हों व्रज माँगनो जू०
६ नंदजू मेरे मन आनंद भयो०
७ ढाढी श्रीलक्ष्मण राजकुमार०
८ हौं जाचक श्रीवल्लभ तिहारो०
९ नंदजू तिहारे सुख दुख गये सबनके०

थापा दें तब—

१ आनंद आज भयो हो भयो जगती पर जयजयकार०

राजभोग-दर्शन ।

१ एहो ए आज नंदराय०
२ ओच्छव हो बड कीजे०

३ बधाई को दिन नीको०

४ तुम जो मनावत सोइ दिन आयो०

५ जोपे श्रीवल्लभ रूप न जाने०--
की छल्ली तुक।

भोग के दर्शन।

१ सब मिलि गावो गीत बधाई०

२ जोपे श्रीवल्लभ प्रगट न होते०

३ नांतर लीला होती जूनी०

संध्या-समय।

१ मेरे मन आनंद भयो०

शयन-भोग आये।

१ श्रीलक्ष्मणगृह प्रगट भये हैं०

२ भक्तिसुधा बरषत ही प्रगटे०

३ प्यारे हरि को विमल यश०

४ लाल गावत गोपी मृदु०

५ श्रीलक्ष्मणवर ब्रह्मधाम०

६ श्रीलक्ष्मणकुलचंद उदित०

७ जन्मत ही आनंद भयो०

८ आनंद बधावनो०

९ प्रभु श्रीलक्ष्मणगृह प्रगट भये०

१० जनम लियो शुभ लग्न विचार०

भोगसरे।

१ जप तप संयम नेम धर्म व्रत०

शयन-दर्शन।

१ धर्म ही तें पायो यह धन०

२ तिहारो घर सुब्रस बसो०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

<u>वैशाख कृष्ण १२.</u> क्रम भाद्र-कृष्ण १० के समान। ८ दिन तक बाललीला गावे।

<u>वैशाख कृष्ण १३.</u> (श्रीपुरुषोत्तमजी के उत्सव की बधाई) आश्विन-कृष्ण ६ के समान।

<u>वैशाख शुक्ल १.</u> (श्रीपुरुषोत्तमजी को उत्सव)

मंगला-दर्शन।

१ बधाई मंगलचार

और आश्विन-कृष्ण १३ के समान।

<u>वैशाख शुक्ल ३.</u> (अक्षयतृतीया)

मंगला-दर्शन।

१ भोर भये देखो श्रीगिरिधर को कमल-मुख०

शृंगार-समय।

१ कुँवर के संग डोलत नंदरानी०

२ कहा अब ओछी ह्वै जिन जात०

३ आजु मोहिं आगम अगम जनायो०

४ आजु गोपाल पाहुने आये आनंद०

५ मज्जन करत गोपाल चौकी पर०

६ भोग-शृंगार मैया सुन मोकों०

शृंगार-दर्शन।

१ धरयो हरि श्वेत पिछोरा ललित०

राजभोग आये।

१ परोसत गोपी घूँघट मारे०

२ परोसत पाहुनी ज्योनारे०

३ चित्र सराहत०

४ मोहन जेंवत०

भोगसरे।

१ बैठे लाल कुंजन में जो पाउँ०

चंदन धरें तब झाँझ-पखावज सूँ०।

१ अक्षयतृतीया अक्षय लीला नवरंग गिरिधर पहरत चंदन०

उत्सव-भोग आये।

१ अक्षयतृतीया अक्षय शुभ दिन पिय कों पिया चढ़ावत चंदन०

२ अक्षयतृतीया शुभ दिन नीको चंदन पहरत नवलकिशोर०
३ आज बने नँदनंदन री नव चंदन को तन लेप किये०
४ आज बने नँदनंदन री नव चंदन अंग अरगजा लाये०

राजभोग-दर्शन।

१ बागो बन्यो बामना चंदन को०

भोग के दर्शन। झाँझ नहीं।

१ चंदन को बागो बन्यो चंदन की खौर किये चंदन के रूख तरे ठाड़े पिय प्यारी०

संध्या-समय।

१ पिछोरा खासा को कटि बाँधे०

शयन-भोग आये।

१ लाड़िली लाल राजत रुचिर कुंज में०
२ सुखद यमुनापुलिन सुखद नवकुंज में०

दूसरे भोग आये।

१ हँसिहँसि दूध पीवत नाथ०

शयन-दर्शन।

१ मेरे घर आओ नंदनंदन०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

वैशाख शुक्ल ४. मंगला-दर्शन।

१ धरचो हरि श्वेत पिछोरा ललित०

शृंगार-समय।

१ घूमत रतनारे नैन सकल निसि जागे०
२ क्योंऽब दुरत हो प्रगट भये०

शृंगार-दर्शन।

१ हौं वार डारों री व्रजईश सीस पर०

राजभोग-दर्शन।

१ सखि सुगंधजल घोर के०

भोग के दर्शन।

१ आज बने नँदनंदन री नवचंदन०

संध्या-आरती सूँ शयन तक वैशाख शुक्ल ३ के समान।

पोढवे में

१ पोढिये लाल निवास अटारी०

वैशाख शुक्ल ११. (श्रीद्वारकेशजी के उत्सव की बधाई।) क्रम आश्विन कृष्ण ६ के समान।

वैशाख शुक्ल १३. वैशाख बदी १० के समान।

वैशाख शुक्ल १४. (श्रीद्वारकेशजी को उत्सव तथा नृसिंह-जयंती)

मंगला-दर्शन।

१ बधाई मंगलचार०

फेर आश्विन कृष्ण १३ के समान।
पंचामृत-समय। राग कान्हरा की आलापचारी।

१ यह व्रत माधो प्रथम लियो०

उत्सव-भाग आये।

१ तौलों हौं वैकुण्ठ न जैहों०
२ कहा पढ़चो प्रह्लाद दुलारे०
३ अपनो जन प्रह्लाद उबारचो०
४ हरि राखे ताहि डर काको०
५ जाको तुम अंगीकार कियो०

शयन-दर्शन।

१ श्रीनृसिंह भक्तभयभंजन०
२ यह धन धर्म ही तैं पायो०
३ तिहारो घर सुबस बसो०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

ज्येष्ठ कृष्ण ५. छप्पन भोग। चैत्र कृष्ण १० के समान।

ज्येष्ठ शुक्ल ४. श्रीव्रजनाथजी के उत्सव की बधाई। आश्विन कृष्ण ६ के समान।

ज्येष्ठ शुक्ल ७. श्रीव्रजनाथजी को उत्सव।

मंगला-दर्शन।

१ बधाई मंगलचार०

आश्विन कृष्ण १३ के समान।

ज्येष्ठ शुक्ल १०. गंगा-दशमी।

मंगला-दर्शन।

१ आगे आगे भाज्यो जात भगीरथ को रथ०

शृंगार-समय।

१ नमो देवी यमुने० अष्टपदी

२ परमेश्वरी देव-मुनि-वंदित देवी गंगे०

३ गंगा ते त्रिभुवन जस छायो०

शृंगार-दर्शन।

१ ग्वालिन कृष्ण दरस सों अटकी०

राजभोग आये।

१ हरिजू कों ग्वालिन भोजन०

२ लाल गोपाल है आनँदकंद०

३ बाँट बाँट सबहिन कों देत०

४ यमुनातट भोजन करत गोपाल०

भोगसरे।

१ भोजन कीनो री गिरिवरधर०

२ बैठे लाल कालिंदी के तीरा०

राजभोग-दर्शन।

१ मेरो लाल गंगा कोसो पान्यो०

२ यमुनातट नवनिकुंज द्रुमदल०

भोग के दर्शन।

१ अंग अनंगन रंग रस्यो०

२ बैठे घनश्यामसुंदर खेवत है नाव०

संध्या-समय।

१ जमुनाजल खेवत है हरि नाव०

शयन-भोग आये। अक्षयतृतीया के समान।

शयन-दर्शन।

१ धीरसमीरे यमुनातीरे०

मान। पोढवे में।

१ बोलत चल व्रजराज लाडिले०

२ नवलकिशोर नवलनागरिया०

ज्येष्ठ शुक्ल ११. मंगला-दर्शन।

१ यमुनापुलिन सुभग वृंदावन नवल लाल०

आज सूँ स्नानयात्रा तक सब समय पनघट के कीर्तन होयँ।

ज्येष्ठ शुक्ल १४.

मंगला-दर्शन।

१ प्राणपति विहरत श्रीयमुनाकूले०

शृंगार-समय।

१ यमुना जल घट भर चली चंद्रावली०

२ मोहि भरन दे जल जमुना को०

शृंगार-दर्शन।

१ आवत ही जमुना भर पानी साँवरे बरन ढोटा कोन को री माई०

राजभोग-दर्शन।

१ आवत ही जमुना भर पानी श्यामरूप काहू को ढोटा वाकी चितवन०

भोग के दर्शन।

१ भरभर धरधर आवत गागर०

संध्या-समय।

१ साँवरो देखत रूप लुभानी०

शयन-भोग आये।

१ यह कोन टेव तिहारी कन्हैया०

२ आवत सिर गागर धरे भरे जमुना०

भोगसरे।

१ कब ते चली यह रीत रहत पनघट०

शयन-दर्शन।

१ हों जल कों गई री सुघट नेह०

मान। पोढवे में।

१ नागरी बेग चलो प्यारी०

२ नवलकिशोर नवलनागरिया०

जेष्ठ शुक्ल १५. (स्नानयात्रा) श्री के जागवे सूँ कलेवा के कीर्तन तक तमूरा पीछे झाँझ-पखावज बजे।

१ श्रीयमुनाजी तिहारो दरस०

मंगल भोगसरे।

१ मंगल मंगलं०

मंगला-दर्शन।

१ मंगल आरती गोपाल की०

स्नान के दर्शन।

राग बिलावल की आलापचारी।

१ मंगलज्येष्ठ ज्येष्ठापून्यो करत स्नान गोवर्धनधारी०

२ ज्येष्ठ मास पून्यो ज्येष्ठा को करत स्नान मुदित गोपाल०

३ ज्येष्ठ मास शुभ पून्यो शुभ दिन करत स्नान गोवर्धनधारी०

४ पूरन मास पूरन तिथि श्रीगिरिधर स्नान करत मनभायो०

शृंगार-समय

१ नमो देवी यमुने०

२ नमो तरनितनया परम पुनीत०

३ श्रीयमुनाजी दीन जान मोहिं दीजे०

४ अधमउधारनी में जानी०

५ यह प्रसाद हों पाऊँ०

६ शरन प्रतिपाल गोपालरतिवर्धिनी०

७ तुमसी ओर न कोई०

८ पतितपावन करे०

९ नेह कारन प्रथम यमुने आई०

१० कालिंदी महाकालिमलहरनी०

११ पिय संग भरि रंग करि कलोले०

१२ नैन भरि देख अब भानुतनया०

१३ प्राणपति विहरत श्रीयमुनाकूले०

१४ श्याम सुखधाम जहाँ नाम इनके०

१५ कहत श्रुतिसार निरधार करके०

१६ यमुनासी नाहिन कोउ और दाता०

१७ श्याम संग श्याम ह्वै रही श्रीयमुने०

१८ जमुना जस जगत में जाय गायो०

१९ चरनपंकज रेन यमुने जु देनी०

२० धाय के जाय जे यमुना तीरे०

२१ जा मुख ते यमुने यह नाम आवे०

२२ धन्य श्रीयमुने निधिदेनहारी०

२३ गुन अपार मुख एक कहाँ लों कहिये०

२४ चित्त में यमुना निसदिन राखों०

शृंगार-दर्शन।

१ कोन की उपरनी ओढ़ आये०

राजभोग आये—

तमूरा सूँ कीर्तन हाय।

१ पीत उपरना वारे ढोटा कहिके टेरे०

२ यमुनातट भोजन करत गोपाल०

३ बाँट बाँट सबहिंन कों देत०

४ लाल गोपाल है आनँदकंद०

भोगसरे।

१ बैठे लाल कुंजन में जो पाऊँ०

२ बैठे लाल कालिंदी के तीरा०

राजभोग-दर्शन।

१ करत गोपाल यमुनाजल क्रीड़ा०

भोग के दर्शन।

१ यमुनाजल गिरिधर करत विहार०

संध्या-समय।

१ यमुनातट देखे नंदनंदन०

शयन-दर्शन।

१ यमुनाजल विहरत है श्याम०

पांढवे में उत्सव के कीर्तन।

आषाढ़ कृष्ण ६.(श्रीद्वारकेशलालजी को उत्सव)

खसखाना को मनोरथ।

मंगला-दर्शन।

१ बधाई मंगलचार०

शृंगार-समय।

१ बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल०

२ श्रीवल्लभ निजनाथ०

३ वेदवचन प्रतिपाल्यो०

४ द्विजवर ह्वै सुख दीनो०

शृंगार-दर्शन।

१ प्रगट भये तैलंगकुलदीपक०

राजभोग आये।

१ श्रीलक्ष्मणगृह महामंगल भयो०

२ शुभ वैशाख कृष्ण एकादशी०

३ गोवल्लभ गोवर्धनवल्लभ०

४ गायन सों रति०

राजभोग-दर्शन।

१ सुंदर तिवारो खसखाने को०

२ उसीर-भवन छायो सुमन०

३ वृंदावन कुंजन में मधि खसखानो०

४ खेवत हैं नाव०

५ बधाई को दिन नीको०

उत्थापन भोगसरें फूल के सिंगार के भाव के कीर्तन।

भोग के दर्शन।

१ देखो री मोहन पनघट पर ठाडो०

संध्या-भोग आये।

१ फूल के भवन गिरिधर नवल राजहीं०

संध्या-समय।

१ कृपा रस नयन कमलदल फूले०

शयनभोग आये।

१ भक्तिसुधा बरषत ही०

२ विट्ठलनाथ बसत जिय जाके०

३ गाऊँ श्रीवल्लभनंदन के गुण०

४ श्रीलक्ष्मणगृह प्रगट भये हैं०

भोगसरे।

१ आज धन भाग हमारे०

शयन-दर्शन।

१ तिहारो घर सुबस बसो०

२ बैठे व्रजराजकुँवर प्यारी संग०

३ चारु नटभेष धर बैठे गोविंद जहाँ०

पौढवे में उत्सव के कीर्तन।

आषाढ़ शुक्ल १. (रथयात्रा को प्रथम दिन)

शृंगार-समय।

राग भैरव की रागमाला।

१ संग त्रियन वन में खेलत रविजातट०

२ मेरे तन की तपत बुझाई०

३ नई ऋतु आई माई परम सुहाई०

शृंगार-दर्शन।

१ मुरली मन मोद बढ़ावत०

राजभोग-दर्शन।

१ सारंग गावत सारंगनैनी०

भोग के दर्शन।

१ सारंगनैनी री काहेको कियो०

संध्या-समय।

१ मदनमोहन पिय गावत राग कल्यान०

शयन-दर्शन।

१ ए मन मान मेरो कह्यो०

आषाढ़ शुक्ल २. (रथयात्रा)

मंगला-दर्शन।

१ मंगल आरती गोपाल की०

शृंगार-समय।

१ कुँवर के संग डोलत०

२ कहा ओछी ह्वै जैहै जात०

३ आओ गोपाल सिंगार बनाऊँ०

४ भोग सिंगार मैया सुन मोकों०

शृंगार-दर्शन।

१ आज और काल और०

राजभोग आये। अक्षयतृतीया के समान भोगसरे।

१ बैठी अटा मानो०

राजभोग-दर्शन। झाँझ-पखावज सूँ—

१ देवी के द्वार ते निकसी देवी दुलहिन०

आज सूँ सबेरे 'सुवा सुघराइ' के तथा साँझ कूँ सोरठ के कीर्तन।

रथ में पधारते समय झालर-घंटा-शंख बजे, तब राग बिलावल की आलापचारी।

पहिले दर्शन।

१ तुम देखो माई आज नैनभर हरिजू०

भोग आये।

१ देखो देखो नैनन को सुख०

२ रथ चढ़ चलत जसोदा अँगना०

३ व्रज में रथ चढ़ चले गोपाल०

४ जसोदा रथ देखन कों आई०

दूसरे दर्शन।

१ रथ बैठे गिरिधारी। राजत परम मनोहर सब अँग०

भोग आये।

१ तू मोहि रथ ले बैठ री मैया०

२ रथ बैठे मदनगोपाल०

३ रथ चढ़ डोलूँगी०

४ रथ बैठे गोपाल०

तीसरे दर्शन।

१ प्रगट प्रेम की फाँस परी हरि डोलत दोरे-दोरे०

भोग आये। आज्ञा माँग के राग मल्हार की आलापचारी।

१ रथ बैठे गिरिधारी। वाम भाग०

२ रथ बैठे नँदलाल०

३ रथ बैठे व्रजनाथ०

४ रथ चढ़ जादोपति आवत०

चौथे दर्शन।

१ लाल माई खरे विराजत आज०

२ जय श्रीजगन्नाथ हरि देवा०

३ वा पटपीत की फहरान०

आरती-समय।

४ तिहारो घर सुबस बसो०

श्रीठाकुरजी मंदिर में पधारें, तब तक होय।

भोग के दर्शन। तमूरा सूँ।

१ आयो आगम नरेश देश-देश में आनंद०

संध्या-समय।

१ गाय सब गोवर्धन तें आईं०

शयन-भोग आये ब्यारू के कीर्तन।

शयन-दर्शन।

१ सुंदर बदन री सुखसदन श्याम को०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

आषाढ़ शुक्ल ३. (रथयात्रा के दूसरे दिन।)

मंगला-दर्शन।

१ तुम देखो माई रथ बैठे जदुराय०

राजभोग-दर्शन।

१ पावसऋतु आगम जान आये निज कुंज सदन नंदनंदन व्रजनरेश चलत चाल गति गयंद०

आषाढ़ शुक्ल ५. (श्रीद्वारकाधीश को पाटोत्सव।)

मंगला-दर्शन।

१ आज गृह नंदमहर के बधाई०

शृंगार-समय।

१ व्रज भयो महर के पूत०

२ जनम-फल मानत जसोदा माय०

३ यह सुख देखो री तुम माई०

४ नैनभर देखो नंदकुमार०

राजभोग आये।

१ नंद तिहारे आयो पूत०

२ दीजे हो ग्वालन नंद बधाई०

३ आज महामंगल महराने०

४ नंद बधाई बाँटत ठाड़े०

राजभोग-दर्शन।

१ एहो ए आज नंदराय के आनंद०

भोग के दर्शन।

१ आज बधावो श्रीव्रजराज के०

संध्या-समय।

१ मेरे मन आनंद भयो०

शयन-भोग आये।

१ जनमत ही आनंद भयो०

२ आज तो आनंद माइ०

३ जनम लियो शुभ लगन बिचार०

शयन-दर्शन।

१ यह धन धर्म ही ते पायो०

२ तिहारो घर सुबस बसो०

मान पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

आषाढ़ शुक्ल ६. (कसूँभी छठ)।

मंगला-दर्शन।

१ ठाड़े रहो अँगना हो पिय०

शृंगार-समय।

१ कुँवर के संग डोलत नंदरानी०

२ कहा ओछी ह्वै जिन जात०

३ सिष्टपिंडूर फल प्राप्त०

४ सुद अषाढ़ सिष्टपिंडूर०

५ कारी घटा सुखकारी०

६ लाल माई बाँधे कसूँभी पाग०

शृंगार-दर्शन।

१ नीके आज लागत लाल सुहाये०

राजभोग-दर्शन।

१ व्रज पर नीकी आज घटा हो०

भोग के दर्शन।

१ देखो सखि ठाड़े नंदकिशोर०

संध्या-समय।

१ भवन मेरो कैसो नीको लागत०

शयन-दर्शन।

१ कुंजमहल के आँगन मध पिय प्यारी०

मान पोढवे में।

१ रंगमहल ठाड़े पिय पाछे प्यारी०

२ पहेरे कसूँभी सारी बैठी पिय सँग०

आषाढ़ शुक्ल ११. (देवशयनी)

शृंगार-समय।

१ रूप सरोवर साजे०

२ प्रसन्न भये हो लाल दियो दरसन०

शृंगार-दर्शन

१ सजल दल-बादर-दल देखियत भलेई०

राजभोग-दर्शन।

१ आई जू श्याम जलद घटा०

भोग के दर्शन।

१ श्यामघटा जुर आई०

संध्या-समय।

१ गाय सब गोवर्धन ते आई०

शयन-दर्शन।

१ राधे रूप की घटा०

मान पोढवे में।

१ कौन करे पटतर तेरी गुन रूप रास हो०

२ सघन घटा घनघोर०

आषाढ़ शुक्ल १५. मंगला-दर्शन।

१ जगाइ माई बोल-बोल इन मोरा०

शृंगार-समय।

१ ए री माई घन मृदंग रस भेद सों०

२ बाजत मृदंग उघटत सुधंग०

शृंगार-दर्शन।

१ नाचत लाल त्रिभंगी रस भरे०

राजभोग-दर्शन

१ वृंदावनभुवि कुंदादिकयुत०

२ नागर नंदलाल कुँवर मोरन संग नाचे०

भोग के दर्शन।

१ इन मोरन की भाँति देख नाचे गोपाला०

संध्या-समय।

१ नाचत मोरन संग श्याम मुदित०

शयन-दर्शन।

१ माईरी श्यामघन तन दामिनी दमकत०

मान।

१ प्यारी के गावत कोकिला०

श्रावण कृष्ण १. (हिंडोरा विराजैं वा दिन)

मंगला-दर्शन।

१ ठाड़े रहो अंगना०

शृंगार-समय।

१ कुँवर के संग डोलत नंदरानी०

२ कहा ओछी ह्वै जैहै जात०

तथा बाललीला के भाव के कीर्तन।

शृंगार-दर्शन।

१ जहाँ तहाँ बोलत मोर सुहाये०

राजभाग-दर्शन।

१ गोपाल माई फेरत है चकडोर०

२ लालसिर फबी कसूँभी पाग०

संध्या-आरती भीतर होय तब नित्य हिंडोराविजय तक

१ लटकत चलत युवती सुखदानी०

हिंडोरा मे पधारते समय राग धनाश्री की आलापचारी होय।

हिंडोरा में भोग आये पे। राग धनाश्री।

१ हिंडोरना हो रोप्यो नंदअवास०

राग जेतश्री।

२ दंपति झूलत सुरंग०

भोगसर भीतर झूले तब।

१ माइ झूलें कुँवरी गोपरायन की०

हिंडोरा-दर्शन। राग मलार की आलापचारी।

१ झूलन आइ व्रजनारि०

२ माइ तेसोइ वृंदावन०

३ रंग मच्यो सिंहद्वार०

४ झूलत सुरंग हिंडोरे राधामोहन०

शयन-दर्शन तमूरा सों।

१ सेन काम की लायो सो मावन आयो०

पोढ़वे में उत्सव के कीर्तन।

जन्माष्टमी की बधाई बैठे तब तक नित्त सबेरे सूँ हिंडोरा तक झाँझ-पखावज बजे सेन में तमूरा बजे।

श्रावण कृष्ण ४. (श्रीजन्माष्टमी की बधाई)

मंगला-दर्शन।

१ नैनभर देखो नंदकुमार०

शृंगार समय टीकेत तथा मुखियाजी जगमोहन में आवे फेर पुस्तक के तिलक होय कीर्तनियान के तिलक होय महाप्रसाद मिले फेर बधाइ गवे।

१ व्रज भयो महर के पूत०

२ आज गृह नंदमहर के बधाइ०

३ जनमफल मानत जसुदा माय०

४ यह सुख देखो री तुम माइ०

ग्वाल बोले।

१ आज नंदजू के द्वारे भीर०

ग्वाल के दर्शन में झाँझ-पखावज-सहित रीत के ४ पलना।

१ झूलो पालने गोविंद०

२ अपने री बाल गोपाल०

३ माइ कमलनैन श्यामसुंदर०

४ तुम व्रजरानी के लाला०

राजभोग आये।

१ जुर चली हैं बधावन नंदमहर घर०

राजभोग-दर्शन।

१ एहो ए आज नँदराय के आनंद०

हिंडोरा-समय गोविंद स्वामी के हिंडोरा रीत के।

शयन-भोग आये।

१ प्यारे हरि को विमल यश०

२ लाल गावत गोपी मृदु मृदु बानी०

३ आनंद बधावनो०

४ जन्मत ही आनंद भयो०

शयन-दर्शन।

१ धर्म ही ते पायो०

पोढ़वे में उत्सव के कीर्तन।

श्रावण कृष्ण १०. (श्रीबालकृष्णलालजी के उत्सव की बधाइ) क्रम आश्विन कृष्ण ६ के समान और हिंडोरा रीत के।

श्रावण कृष्ण १३. (श्रीबालकृष्णलालजी को उत्सव) दुहेरो मंडान

मंगला-दर्शन।

१ बधाइ मंगलचार०

२ बोले माइ गोवर्धन पर मुरवा०

शृंगार-समय ।

१ व्रज भयो महर के पूत०
२ बहुरि कृष्ण श्रीगोकुल प्रगटे०
३ चहुँ जुग वेद वचन प्रतिपाल्यो०
४ श्रीगोकुल ह्वै घरघर अति आनँद०
५ अबके द्विजवर ह्वै सुख दीनो०

तथा मलार के सेहरा के भी ४ कीर्तन

राजभोग आये बधाइ ८

राजभोग सरे ।

१ प्रगटे श्रीबालकृष्ण सुजान०
२ भयो श्रीविट्ठल के मनमोद०

राजभोग-दर्शन ।

१ एहो ए आज नंदराय के आनंद भयो०
२ सावन दूल्हे आयो०
३ रंगमहल रंगराग०

आरती-समय ।

१ आज बधाइ को दिन नीको०

संध्या-समय ।

१ लटकत चलत०

फेर चोकडा ।

१ हेम हिंडोरना०
२ रसिक हिंडोरना०

हिंडोरा के दर्शन ।

१ हिंडोरे झूलत है ललना०
२ ए दोउ रीझे भीजे झूलत०
३ झूलत दुलहिन संग लिये०
४ श्यामाजु दुलहिन दूल्हे हो रसिकवर०

फेर चारो रीति के हिंडोरा ।

शयन-भोग आये बधाइ ८

शयन-भोग सरे बधाइ २

हिंडोरा सेहरा के २

शयन-दर्शन ।

१ धर्म ही ते पायो०
२ नवललाल को सेहरो०
३ ओलर आइ हो घनघटा हिंडोरे०
४ तिहारो घर सुबस बसो०

मान पोढ़वे में उत्सव के कीर्तन २

तथा सेहरे के भाव के २

श्रावण कृष्ण ३०. (हरियाली अमावस)

शृंगार-समय ।

१ सखीरी हरियारो सावन आयो०
२ यह पावस ऋतु आइ०
३ देखो माइ हरियारो सावन आयो०
४ हरयो टिपारो सीस बिराजत०

शृंगार-दर्शन ।

१ सीस टिपारो धरे०
२ मदनमोहन वन देखत अखारो रंग०

राजभोग दर्शन ।

१ पावस नट नटयो अखारो०

हिंडोरा के दर्शन ।

१ झूले माइ गोकुलचंद हिंडोरे०
२ हिंडोरे माइ झूलत गिरवरधारी०
३ हिंडोरे नीकी आज रमकी०
४ सोहत बन आयो री सावन हरियारी०

श्रावण शुक्ल ३. (ठकुरानी तीज)

मंगला-दर्शन ।

१ कहो तुम कोन हो कहाँ ते आये अब०

शृंगार-समय ।

१ व्रज भयो महर के पूत०

२ चल बर कुंजन बरषत मेह०
३ सुरंग चूनरी प्यारी पचरंग पहरे०
४ गायो है मलार धुन सुन आइ०
५ लाल मेरी सुरंग चूनरी देहो०

श्रृंगार-दर्शन ।

१ सावन तीज हरियारी सुहाइ०

राजभोग-दर्शन ।

१ श्याम सुन नियरे आयो०
२ चूनरी पाग और चूनरी पिछोरा०

हिंडोरा में उत्सव-भोग आये ।

१ निज सुख पुंज वितान कुंज हिंडोरना०
२ सावन की तीज हिंडोरे झूले०

हिंडोरा-दर्शन ।

१ तीज-महातम आयो०
२ रंगहिंडोरना प्यारीजू झूलन आइ०
३ रंगहिंडोरना झूलत राधा सब०
४ राधेजू झूलत रमक-रमक०

शयन-भोग आये ।

१ तीज सुनि आये हैं हरि मेरे०
२ बालआलिन की मंडली फूली अति०
३ सुदी सावन हरियारी तीज०
४ झूलत रसिक लाडिली सघन वन०
५ रमक झमक झूलन में झमक मेह०
६ सघन कुंज परछाँह प्रीतम दोउ०
७ झूलत दोउ कुंज-कुटीरे०
८ नवल लाल पिय के सँग झूलन०
९ ए दोउ झूलत हैं बाँह जोरे०
१० व्रज के आँगन माँच्यो हिंडोरो०
११ झूलत मोहन रंग भरे०

शयन-दर्शन ।

१ यमुनातट नव सघन कुंज में०
२ सो तू राख ले री झोटा तरल०

मान पोढ़वे में ।

१ कुंजमहल के आँगन मध पिय-प्यारी०
२ घनघटा आइ घूमघूम के न्हेनी न्हेनी०

श्रावण शुक्ल ४. मंगला-दर्शन ।

१ आवत लाल लाडिली फूले०
२ झूलत कुंजन कुंजकिशोर०

श्रृंगार-दर्शन ।

१ घुमड़-घुमड़ घटा आई झूम-झूम लता रही०

यदि भूलैं तो ।

१ झूलो तो सुरंग हिंडोरे झुलाउँ०

श्रावण शुक्ल ११. (पवित्रा एकादशी)

मंगला-दर्शन ।

१ आज गृह नंदमहर के बधाइ०

श्रृंगार-समय ।

१ व्रज भयो महर के पूत०

श्रृंगार के दर्शन में पवित्रा धरे तो राग सारंग की आलापचारी ।

१ पवित्रा पहरे श्रीगिरिधरलाल० सुंदर श्याम छबीले मोहन०
२ पवित्रा पहरे श्रीगिरिधरलाल० वाम भाग वृषभाननंदिनी०
३ पवित्रा पहरे श्रीगिरिधरलाल० तीनो लोक पवित्र किये है०
४ पहरत पाट पवित्रा मोहन नँदरानी पहरावत०

पवित्रा धरै पीछे खिलोनान सूँ खेलैं तब बहोत जल्दी ।

१ व्रज भयो महर के पूत०

राजभोग आये। राग सारंग की बधाइ।

राजभोग-दर्शन।

१ एहो ए आज नंदराय के आनंद०

हिंडोरा-दर्शन। गोविंद स्वामी के चारो हिंडोरा रीत के पद।

शयन-भोग आये।

१ प्यारे हरि को विमल यश०

२ गावत गोपी मृदु-मृदु बानी०

३ आनंद बधावनो०

४ जन्मत ही आनंद भयो हरि०

शयन-दर्शन।

१ धर्म ही ते पायो०

पोढवे में उत्सव के कीर्तन।

साँझ कूँ पवित्रा धरे तो भी पवित्रा के कीर्तन राग सारंग में गवे।

खेल को कीर्तन राग देव गंधार में।

श्रावण शुक्ल १२। हिंडोरा-दर्शन। राग कान्हरा।

१ यमुनातट नव सघन कुंज में०

२ झूलत तेरे नैन हिंडोरे०

३ व्रजयुवतिन के यूथ में०

४ हिंडोरे माइ झूलत री नँदनंद०

शयन-दर्शन।

१ दिपत दिव्य दरबार श्रीव्रजराज को०

२ बाल झुलावन आइ झूले नवलबिहारी०

श्रावण शुक्ल १५. (राखी को उत्सव)

मंगला-दर्शन।

१ आज गृह नंदमहर के बधाइ०

शृंगार-समय।

१ व्रज भयो महर के पूत०

२ आपुन मंगल गावे०

३ सबै मिल मंगल गावो माइ०

शृंगार-दर्शन।

१ यह सुख देखो री तुम माइ०

शृंगार में राखी धरैं तो राग सारंग की आलापचारी।

१ मात यशोदा राखी बाँधत बल और श्रीगोपाल के०

राखी धरे पीछे खिलोनान सूँ खेलैं तब बहोत जल्दी।

१ झूलो पालने गोविंद०

२ अपने री बालगोपाल रानीजू०

३ माइ कमलनैन श्यामसुंदर०

४ तुम व्रजरानी के लाला०

साँझ कूँ राखी धरैं तो भी ये सब कीर्तन इन्हीं रागन में होयँ।

राजभोग आये।

१ आज हौं नंदे जाचन आइ०

राजभोग-दर्शन।

१ एहो ए आज नँदराय के आनंद०

हिंडोरा-दर्शन। राग अडाना।

१ सावन की पून्यो मनभावन हरि०

२ भली करी प्रीतम प्यारे परब मनावन०

३ सुघर रावर की गोपकुमार गोकुल की०

४ गोपीजन गावे गीत राखी को हैं०

शयनभोग आये।

१ गावत गोपी मृदु-मृदु बानी०

२ प्यारे हरि को विमल यश०

३ आनंद बधावनो०

४ जनमत ही आनंद भयो हरि०

शयन-दर्शन

१ आठे भादों की अँधियारी०

ऐसी चार है, सो जन्माष्टमी तक नित्त एक गावनी

२ यह सुख सावन में बनि आवे०

पोढ़वे में।

१ धन रानी जसुमति गृह आवत०

हिंडोरा-विजय होयँ तब गोविंदस्वामी के चारो रीत के पद।

आरती-समय।

१ तिहारो घर सुबस बसो०

जन्माष्टमी की बधाइ में मुकुट धरैं तब।

शृंगार के दर्शन।

१ नँदराय के नवनिधि आइ०

सेहरा धरैं तब।

राजभाग आये।

१ नंदरानी सुत जायो महर के मंदिर वेग चलो री०

राजभोग-दर्शन।

१ रानीजू जीवो दूल्हे तेरो व्रजजीवन जायो०

भोगसंध्या-समय।

१ हेरी हेरी रे भैया हेरी रे०

२ हेरी दे किन गावहीं भलो बन्यो है काज०

शयन-भोग आये।

१ हेरी हेरी रे भैया हेरी रे०
सकल काज पूरन भये नैनन देखे आज०

किरीट धरैं तब।

मंगला-दर्शन।

१ हरिमुख देखिए बसुदेव०

शृंगार-समय।

१ प्रगटित मथुरा माँझ हरि०

२ जागी महर पुत्रमुख देख्यो०

३ आनँद ही आनंद बढ़्यो अति०

शृंगार-दर्शन।

१ कमलनैन शशिवदन मनोहर देखियत ए विचित्र अनुपगति०

राजभोग आये।

१ देखो अद्भुत अवगत की गति०

२ देवक उदधि देवकी सींप०

३ आज बाबा नंदे जाचन आयो०

संध्या-समय

१ गोकुल में बाजत कहाँ बधाइ०

शयन-भोग आये।

१ जनम लियो जादोकुल राय०

शयन-दर्शन।

१ देवकी मन-मन चकित भइ०

टिपारा धरैं तब।

शयन-भोग आये।

१ महा निस आठे भादों की०

पगा धरैं तब।

शृंगार-समय।

१ जन्म सुत को होत ही आनंद भयो नँदराय०

राजभोग आये।

१ आज बाबा नंदै जाचन आयो०

२ आँगन दधि को उदधि भयो०

राजभोग-दर्शन।

१ हों व्रजवासिन को मगा०

२ हों व्रजवासिन को मगा०

फेटा धरैं तब।

भोग के दर्शन।

१ एरी सखि प्रगटे कृष्णमुरारी०

व्रज घर-घर आनंद भयो०

दधिकाँदो आँगन नंद के०

दुमाला धरैं तब।

शृंगार-समय।

१ प्रथमहि भादों मास अष्टमी०

भाद्रपद कृष्ण ७. (छट्ठी को उत्सव)

मंगला-दर्शन।

१ माइ सोहिलो आज नंदमहर घर०

शृंगार-समय।

१ आज वन कोउ वे जिन जाय०

२ लाल को जन्मघोस दिन आयो०

ग्वाल के दर्शन।

१ झूलो पालने गोविंद०

२ आपने बाल गोपाल०

३ माइ री कमलनैन श्यामसुंदर०

४ तुम व्रजरानी के लाला०

राजभोग आये।

१ नंद बधाइ दीजे हो ग्वालन०

२ ग्वाल बधाइ माँगन आये०

३ नंद बधाइ बाँटत ठाड़े०

४ सब मिल ग्वालन देत असीस०

५ नंद-वृषभान के हम भाट०

६ श्रीव्रजराज के हम ढाढी०

राजभोग-दर्शन।

१ सब ग्वाल नाचे गोपी गावे०

भोग के दर्शन।

१ रानीजू जायो पूत सुलच्छन०

२ आज अति बाढ्यो हे अनुराग०

संध्या-समय।

१ आज बधावो श्रीव्रजराज के०

शयन भोग आये।

१ आज छठी जसुमति के सुत की०

२ मंगलघोस छटी को आयो०

३ धर्म ही ते पायो०

४ गावत गोपी मृदु-मृदु बानी०

५ प्यारे हरि को विमल यश०

६ एसो पूत देवकी जायो०

७ जन्मत ही आनंद भयो हरि०

८ सो उपाय कछु कीजे०

९ जन्म लियो शुभ लगुन बिचार०

१० आज तो आनंद माइ आज तो०

११ आनंद बधावनो०

१२ रंग बधावनो०

१३ आज तो गोकुलगाम कैसो०

१४ जसोदे बधाइयाँ०

१५ गोपाललाल गोकुल चले०

१६ भादों की अति रैन अँधियारी०

१७ अँधियारी भादों की रात०

१८ भादों की रैन अँधियारी०

१९ श्रवन सुन सजनी बाजे मंदिलरा०

शयन-दर्शन।

१ रावल के कहे गोप०

२ आठे भादों की अँधियारी०

पोढ़वे में।

१ धन रानी जसुमति गृह आवत गोपीजन०

ग्रहण की रीति

सबेरे मंगलभोग अरोग के जो ग्रहण के दर्शन होयँ तो माहात्म्य के पद नहीं गावे प्रथम

१ मंगल मंगलं०

गाइ के फेर ऋतु अनुसार दूसरे कीर्तन गावने।

राजभोग अरोग के जो ग्रहण के दर्शन खुले तो राजभोग आरती को कीर्तन गाइके फेर—

१ चक्र के धरनहार गरुड़ के असवार०

२ जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत०

गाय के पीछे ऋतु अनुसार दूसरे कीर्तन गावने।

शयनभोग अरोग के जो ग्रहण के दर्शन होयँ तो प्रथम राग मालव में।

१ मोहन नंदराजकुमार०

२ पद्म धरयो जन ताप निवारन०

३ बंदौं धरन गिरिवर भूप०

४ चरन-कमल बंदौं जगदीश०

गाइ के ऋतु अनुसार दूसरे कीर्तन गावने।

दिवाली के दिन ग्रहण होय तो साँझ कूँ शयन के दर्शन में

१ गाय खिलावन खिरक चले री०

२ गाय खिलाय आये नँदनंदन०

फेर जा दिन कान गावे ता दिन दिवाली की रीत मुजब सब कीर्तन होयँ अन्नकूट नहीं होय तहाँ तक अन्नकूट के कीर्तन गवे. इंद्रकोप के अन्नकूट होये पीछे सात दिन तक गवे।

नित्य रीति

प्रथम श्रीठाकुरजी जागें तब नित्य श्रीमहाप्रभूजी को और श्रीगुसाईंजी को ऐसे दो बिनती के पद गावने। एक जगायवे को और दो पद कलेवा के, एक जमनाजी को और एक खंडिता को ऋतु-अनुसार। (बाललीला और बधाई के दिन खंडिता को पद नहीं गावनो।)

मंगलभोग सरे मंगल मंगलं०। मंगला के दर्शन में, शृंगार-समय और शृंगार के दर्शन में ऋतु-अनुसार।

ग्वाल बाले वैया के पद गावने। बधाई के दिन होयँ तो बधाई। वसंत धमार के दिन होयँ तो वाके कीर्तन गावने। ग्वाल के दर्शन में एक पलना सदा गावनो।

राजभोग आये ऋतु - अनुसार। छाक के दिन में चार छाक के। भोजन के दिन में चार भोजन के। बधाई के दिन में—बड़ी होय ता एक, और छोटी होय तो चार। एसे ही वसंत और धमार में। राजभोग सरे एक अचवायबे को, एक बीरी को पद गावनो।

राजभोग के दर्शन में, भोग के दर्शन में और संध्या के दर्शन में ऋतु-अनुसार।

ग्वाल बोले दो पद वैया के। बधाई के दिन में बधाई। वसंत धमार में वसंत धमार।

शयन-भोग आये दो पद ब्यारु के दूसरे भोग में एक दूध को। शयन के दर्शन में एक पद ऋतु-अनुसार। पोढ़वे में मान को एक और पोढवे को एक, एसे दो कीर्तन गावने। आश्रय के दो— तामे एक श्रीमहाप्रभूजी को, एक श्रीगुसाईंजी को गावनो।

शीतकाल-संबंधी रीति

१ टिपारा

लाल रंग के वस्त्र को टिपारा धरैं तब

राजभोग-दर्शन ।

१ देखो सखी सुंदरता को पुंज०

भोग के दर्शन ।

१ नाचत गावत बन ते आवत लाल टिपारो सीस रह्यो फब०

संध्या-समय ।

१ आज लाल टिपारे छबि अति जु बनी०

शयन-दर्शन ।

१ आवत मदनगोपाल त्रिभंगी०

पीले रंग के वस्त्र को टिपारा धरैं तब

संध्या-समय ।

१ आवत ब्रज को री गोधन संगे०

माणिक और जड़ाव को टिपारा धरे तब

भोग के दर्शन ।

१ गोधन पाछे-पाछे आवत है नटवर काछे०

संध्या-समय ।

१ आज बने बन ते आवत गोपाल०

और कोई जात को टिपारा धरे तब

राजभोग-दर्शन ।

१ विमल कदम्ब-मूल अवलम्बित० अथवा

२ नवल निकुंज महल रसपुंज में०

भोग के दर्शन ।

१ गायन सों पाछे-पाछे काछनी सों कटि काछे० अथवा

२ राधे तेरे नैन किधों०

संध्या-समय ।

१ चंद्रमान नटवार साँझ समय०

२ किरीट—

किरीट धरैं तब

राजभोग-दर्शन ।

१ आज अति शोभित हैं नँदलाल०

भोग के दर्शन ।

१ देखो सखी राजत है नँदलाल०

इन दोनों में सूं कोई भी एक राजभोग और भोग में गावनो ।

अथवा भोग के दर्शन ।

१ सोहत गिरिधर मुख मृदु हास०

संध्या-समय ।

१ बेन माइ बाजत री बंसीबट०

३ दुमाला—

पीलो दुमाला धरे तब

राजभोग-दर्शन ।

१ अधिक रजनी मानी हो नँदलाल०

अथवा ये दोउ एक रंग रँगे गहरे रंग मजीठ

रंग-बिरंगी दुमालो धरैं तब

राजभोग-दर्शन ।

१ अति छबि बन्यो दुमालो सीस०

४ दुपेची, खिरकीदार पाग—

दुपेची अथवा खिरकीदार पाग धरे तब

राजभोग-दर्शन ।

१ आये हो जु अलसाने जो ए हम०

भोग के दर्शन ।

१ सोहत सुरँग दुरंग पाग० अथवा

२ लाडिलो ललित लाल वारी हो०

५ केसरी पाग, बागा—

केसरी पाग और बागा धरैं तब।

राजभोग के दर्शन

१ आज बने मोहन रँगभीने०

२ अरुन दृगन की शोभा०

६ पाग—

लाल पाग धरैं तब।

भोग के दर्शन।

१ सोहत लाल पाग०

श्याम पाग धरै तब।

राजभोग-दर्शन।

१ श्याम लग्यो सँग डोलें०

शयन-दर्शन।

१ मेरे जीवन सुजान कान्ह०

२ तेरे अंग श्याम सारी सोहे०

७ घटा—

सफ़ेद घटा होय तब।

राजभोग-आये।

१ जेंवत दोउ रंग भरे०

२ गोपवधू अपनी सौंज बनाइ०

३ जेंवत श्रीवृषभाननंदिनी०

४ दोउ मिल जेंवत कंचनथारी०

राजभोग-दर्शन।

१ आधो मुख नीलांबर सों ढाँप्यो०

पीली घटा होय तब।

राजभोग आये सफ़ेद घटा समान

राजभोग दर्शन।

१ पीरे पटवारी अँग-अँग की है साँवरी०

२ ठाड़ो री खिरक माह कान को०

हरी घटा होय तब।

राजभोग आये सफ़ेद घटा-समान

राजभोग-दर्शन

१ माइ मेरो हरि नागर सों नेह०

भोग के दर्शन।

१ सोहत हरित कंचुकी०

लाल घटा होय तब।

राजभोग आये सफ़ेद घटा-समान।

राजभोग दर्शन।

१ गोकुल की पनिहारिन पनियाँ०

श्याम घटा होय तब।

शृंगार-दर्शन।

१ जागे हो रैन तुम सबै नैना अरुन हमारे०

राजभोग आये।

१ रानीजू एक बचन मोहि दीजे०

२ जसोदा एक बोल जो पाऊँ०

३ आज गोपाल पाहुने आए०

४ बल गई श्याम मनोहर गात०

राजभोग-दर्शन।

१ ए कहूँ उमड़-घुमड़ गाजत हो पिय०

भोग के दर्शन।

१ मीठी-मीठी बतियाँ०

शयन-दर्शन।

१ अरी सखी सुंदर श्याम सलोना०

मान पोढ़वे मे।

१ मनावन आए मनाय नहिं जाने०

२ श्यामाजू सुख-सेज०

श्याम घटा होय वाके दूसरे दिन।

राजभोग-दर्शन।

१ जैसो श्याम नाम तैसो तन-मन०

शयन-दर्शन।

१ पिय तेरी चितवन में कछु टोना०

८ सेहरा—

सेहरा धरैं तब ।

शृंगार-दर्शन ।

१ न्याय दीन दूल्हे हा नँदलाल०

राजभोग-दर्शन ।

१ दिन दूल्हे मेरो कुँवर कन्हैया० अथवा

२ राधेजू नवदुलही, दूल्हे मदनगोपाल०

भोग के दर्शन।

१ आज बने व्रजराज कुँवर० अथवा

२ बसो मेरे नैनन में यह जोरी० अथवा

३ आज बने दूल्हे श्रीव्रजराज०

संध्या-समय।

१ राधा प्यारी दुलहिनीजू को दुलहा०

शयन-दर्शन।

१ जुगल वर आवत है गठजोरे०

मान पोढवे में ।

१ राय गिरिधरन सँग राधिका रानी०

२ श्यामाजू दुलहिनी०

सेहरा धरैं वाके दूसरे दिन।

मंगला दर्शन ।

१ न्याय दीन दूल्हे हो नँदलाल० अथवा

२ चिरियन की चुहुचान सुन प्रात उठी०

९ मोरचंद्रिका—

शयन में श्रीमस्तक पर मोरचंद्रिका धरैं तब।

शयन के दर्शन।

१ गिरिधर लाल बने रँग भीने०

१० वर्षा में—

बादर बरसते होंय वा दिन।

राजभोग-दर्शन।

१ माइ मेरो बहु नायक सों नेह०

११ सफेद जरी की पाग पर मोरचंद्रिका धरैं तब

राजभोग-दर्शन।

१ पाछली रात परछाँह पातन की लाल०

इति श्रीतृतीय-गृह (श्रीद्वारकाधीश) की कीर्तन-प्रणालिका समाप्त

सं० १९९४



कीर्तन-प्रणालिका का शुद्धाशुद्ध पत्रक

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	२१	सेन	शयन
	२३	नन्दकुमार	नन्दराजकुमार
४	१६	आँगन नंद	आँगन रंग
५	२७	ढाढी	(ढाढी)
७	२६	गूजारिया	गुजरिया
	१४	आव	आगे
	२६	घेरी घेरी	घेरो घेरा
६	१२	राम रत्न	नाम रत्न
१०	२४	बरखत	वरषत
११	१२	भाँवते	भाव तें
	२३	कुँवर १	कुँवर के
	२५	रस	रास
१३	६	दूभुत	अद्भुत
	११	उत्सव)	उत्सव—
	१७	गावत	गायन
	१६	वही	वहौ
	२८	कोहि	तोहि
१४	१३	अपने	अपनें २
	१४	का० क्र० कु० १३	का० कृ० १३० (धनतेरस)
१५	१०	निरिवर	गिरि ०
	२३	घोवर्धन	गोवर्धन
	२४	सिरक	खिरक
१७	६	आलाप०	झाँझ पखावज सूँ आलाप०
२०	२८	ननहारो	तिहारो

पत्र	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१	१७	सेन	शयन
२४	६	कीं	श्री
	१०	मन	मनि०
	१४	नावत	गांवत
	२३	क्रीट	किरीट
२५	७	पंचम	पंचमी
२६	२७	मोर	मोद
३०	२२	प्यारी	प्यारो
	३१	बागीचा	८४ खंभ का बगीचा
३२	८	माह	माइ
	१४	,,	,,
	२२	मयी	भई
३७	१६	( )	तथा
	२५	कीग	की
३९	१५	७०	७
४०	८	माह	माइ
४२	१४	श्रीद्वा० तथा नृ०	श्रीनृ० तथा द्वा०

सूचना—शीघ्रता, दृष्टि-दोष तथा प्रेस के कारण इनके अतिरिक्त भी जो अशुद्धियाँ रह गई हों, कृपया उन्हें सुधार लें। —संपादक